निर्भीक संदेश

(भोजपुरी-हिन्दी की साहित्यिक पत्रिका)

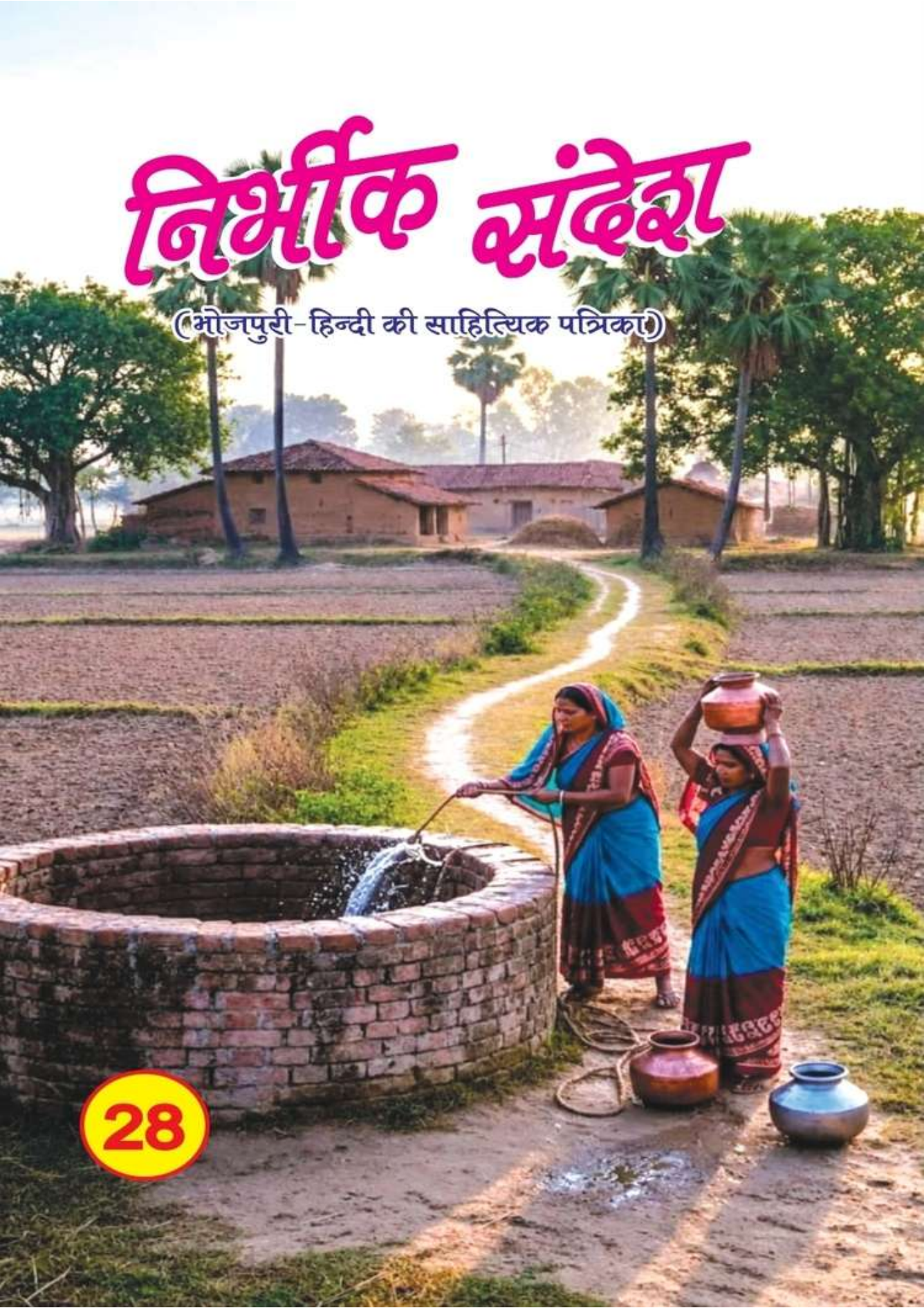

28

निर्भीक जयंती समारोह—2025

दीप प्रज्ज्वलन आ डॉ० 'निर्भीक' के चित्र पर पुष्पार्पण
के साथ समारोह के उद्घाटन।

मंचासीन अतिथियन द्वारा भोजपुरी के ख्यातिलब्ध साहित्यकार
आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रवर समिति
सदस्य डॉ० सुनील कुमार पाठक के डॉ० निर्भीक स्मृति सम्मान

मंचासीन अतिथियन द्वारा 'निर्भीक संदेश' के
27 वां अंक के लोकार्पण

संस्थापक
स्व० डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

सम्पादन परामर्श
कन्हैया सिंह 'सदय'
डॉ० विष्णुदेव तिवारी (बक्सर)

सम्पादक
डॉ० अजय कुमार ओझा
: 09031719481

सह–सम्पादक
शैलेन्द्र पाण्डेय 'शैल'
डॉ० संध्या सिन्हा
दिव्येन्दु त्रिपाठी

प्रकाशक / सम्पर्क
ओझा प्रकाशन
होल्डिंग नं० 102, जोन नं० 11,
भोजपुरी पथ, बिरसानगर,
जमशेदपुर - 831019 (झारखण्ड)
e-mail : nirbhiksandesh@gmail.com

सहयोग राशि
एक प्रति – 25 / –
आजीवन – 750 / –

मुद्रक
शिक्षा भारती मुद्रणालय
1 / 27, काशीडीह, जमशेदपुर

पत्रिका पाईं, पढ़ी, आपन बेलाग प्रतिक्रिया भेजीं आ ना सपरे त कम से कम पावती के सूचना त जरूरे भेजीं ताकी आगे के अंक रउरा भीरी फेरू भेजल का सको।

निर्भीक संदेश

(भोजपुरी-हिन्दी की साहित्यिक पत्रिका)

अंक–28 वर्ष–23 मई 2026

अनुक्रम

सम्पादकीय 2

गीत / गजल / कविता
डॉ0 हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' 3
रामप्रसाद साह 5
पूनम शर्मा 'स्नेहिल' 5
शैलेन्द्र पाण्डेय 'शैल' 8
राम प्रकाश तिवारी "ठेठबिहारी" 14
आरती श्रीवास्तव 'विपुला' 14
हरिहर राय चौहान 22
छाया प्रसाद 22
अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष' 26
डॉ० निवेदिता श्रीवास्तव 'गार्गी' 28
माधवी उपाध्याय 28
विनोद सिंह 'गहरवार' 29
मनीष सिंह 'वंदन' 32
वसंत जमशेदपुरी 32

कहानी / लघुकथा / रेखाचित्र
डॉ0 रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' 4
अयोध्या प्रसाद उपाध्याय 9
डॉ0 रागिनी भूषण 11
रिम्मी 13
डॉ० रजनी रंजन 23
डॉ0 वीणा पाण्डेय 'भारती' 30

आलेख / आलोचना / समीक्षा
डॉ0 महामाया प्रसाद 'विनोद' 6
डॉ0 विष्णुदेव तिवारी 16
हरिहर राय 'चौहान' 33
डॉ0 विवेकी राय 35

पत्रिका में व्यक्त विचारन खातिर रचनाकार खुद जिम्मेवार बाड़न, सम्पादक भा प्रकाशक ना।

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

भोजपुरी के नेवरती एगो निर्भीक संदेश

भोजपुरी लेखन के शुरुआती दौर में भोजपुरी के पढ़ल-लिखल लोग 'गँवारु बोली' कहि के नकार देत रहे। आजु 2026 में खड़ा होके देखला प लागत बा कि लड़ाई अभी खतम नइखे भइल, खाली मैदान बदलि गइल बा। ओह घरी भोजपुरी के 'गँवारू' कहल जात रहे, आजु 'फूहड़' कहल जाता। अपमान के कपड़ा नया बा, आत्मा उहे पुरनका।

एकरा खातिर पहिलका संकट घर के भीतरे बा। 20 करोड़ लोगन के मातृभाषा भोजपुरी आज अपनहीं घर में बेगानी हो गइल बिया। माई-बाबूजी लइकन से अंग्रेजी में बात करत बाड़े। स्कूल में भोजपुरी बोलला पर डाँट पड़त बा। अब लइकन के समझ में इहे नू आई कि ई बाहर बोले लायक भाषा नइखे। जवन भाषा ड्राइंग रूम से निकल के क्लास रुम तक ना पहुँचे, ऊ प्रायः मर जाले।

दुसरका संकट बाजार के बा। यू-ट्यूब पर 'भोजपुरी' लिखते जवन परोसल जाता, ओकरा के देखते शर्म से माथा झुक जाला। भिखारी ठाकुर 'बिदेसिया' में जवन पीड़ा गवलें, महेंद्र मिश्र 'पूरबी' में जे पिरित उड़ेललें, ऊ सब 50 लाख व्यू वाला दोअर्थी गाना के शोर में दबा गइल। नतीजा ई भइल कि भद्र समाज भोजपुरी से मुँह मोड़ लिहलस।

तीसरका संकट सरकार आ समाज के बेरुखी बा। 79 साल के आजादी के बादो भोजपुरी 8वीं अनुसूची में नइखे। बिहार भोजपुरी अकादमी के बजट ऊँट के मुँह में जीरा जइसन बा। यू० पी० में त अकादमी हइये नइखे। भोजपुरी के रचनाकार लोग पुस्तक भा पत्र - पत्रिकन के प्रकाशन सीमित मात्रा में खाली सप्रेम भेंट करहीं भर करवावत बा। काहें से कि एकर बिक्री के त कवनो सम्भावना हइये नइखे।

हमनी साहित्यकार लोग भोजपुरी के 'लोक' में अतना ना बाँध देनी जा कि 'शिष्ट साहित्य' रचे के भुला गइनी। प्रेमचंद हिंदी के 'गोदान' दिहलें, बाकिर भोजपुरी के 'गोदान' के दीही ? हमनी का गावे वालन के करोड़पति बना देनी जा आ लिखे वाला के भूखे मार देनी जा। इहे ना, हमनी का फूहड़पन के व्यूज देनी आ गंभीरता के दुत्कार देनी। एकरा खातिर हमनी के पांच गो संकल्प लेबे के पड़ी।

पहिलका घरहीं से शुरु करत अपना लइकन से भोजपुरी में बात करीं। बोली माई के दूध जइसन होला, पियाइब त मीठ लागी।

दूसरका जवन गाना हमनी का माई-बहिन के संगे नइखीं जा सुन सकत, ओकरा के देखल-सुनल बंद कर दीहीं। व्यूज गिरी तबे बाजार सुधरी।

तीसरका भोजपुरी के एगो कवनो साहित्यिक पत्रिका के ग्राहक बनिके ओकरा प्रकाशन में आपन सहयोग जरुर करीं। जवना से भोजपुरी मरी ना, जियत रही।

चउथा बैंक में फॉर्म से लेके रेलवे अनाउंसमेंट तक हर जगह भोजपुरी खातिर आपन हक माँगी । मैथिली वाला लोग माँग के ले गइल, हमनी का चुप बइठल रहब जा त के दीही ?

पाँचवाँ फेसबुक पर दूइये लाइन सही,

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर भोजपुरी में लिखीं। भाषा इस्तेमाल से बांचेले, अजायबघर में राखला से ना।

''साँच बोल, प्रिय बोल, बाकिर अप्रिय साँचो बोले के पड़े त चू क मत।'' आज उहे अप्रिय साँच बोले के समय बा। भोजपुरी मरत नइखे, ओकरा के मारल जा रहल बा – कबो सरम से, कबो फूहड़पन से त कबो चुप्पी से।

जब तक रामचरितमानस रही तब तक अवधी भाषा रही आ जब तक सूरसागर रही तब तक ब्रजभाषा रही। ओही तरे जब तक कबीरदास के पद रहिहें स, तब तक भोजपुरी भाषा रही। ई सांच बा कि भोजपुरी भाषा के साहित्य आजु के युग संदर्भन के ही उरेह रहल बा आ कुछ बढ़िया रचना आ रहल बाड़ी स । हमनी के आपन भाषा के महत्व देबे के पड़ी। तबे दोसरा से ई आशा कइल जा सकत बा कि ऊ हमनी के भाषा आ साहित्य के मान दी।

कबीर, सुर भा तुलसीदास जी अपना सम्यक यथार्थ के अपना साहित्य में रचत कुछ चिरंतन सत्यन के अभिव्यक्त कइल लोग। एह से ऊ लोग हमेशा प्रासंगिक रही आ ओह लोग के साहित्य जन जीवन के आह्लादित करत हमेशा प्रेरणा देत रही।

भोजपुरी खाली भाषा ना, 20 करोड़ लोग के माई ह आ माई के बचावे खातिर अगर बाउरो बने के पड़े, त बनीं आदमी।

जय भोजपुरी !

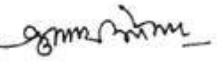

मौसम के मरजी बा

□ डॉ० हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

मौसम के मरजी बा,
देखीं छिंउकी झूकि गइल।
हरसिंगार के झरत फूल बा,
पतई चूकि गइल।।
जोह लेत रिश्ता–नाता के,
गुपचुप साँस चले,
छुईमुई – हमदरदी–
शुभ कामना उदास छले।
मुँह के गेस्टरूम में लपकि
बधाई ढूकि गइल।।

गरम–गरम जिनगी गायब,
रोटियो अब गरम कहाँ!
अधिकारे के बीन बजा,
भटके सभ जहाँ–तहाँ।
चाह मछरिया अस पानी में कतहूँ छीपि गइल।।

गांधी के गर–हार पेन्हा,
अभिलेख साँच टाँके।
मतलब के चाबुक, रिश्ता,
अपनापन के हाँके।
तीर–अगोरत, रेत–सँगोरत नदिया सूखि गइल।।
मौसम के मरजी बा, देखीं पतई सूखि गइल।।

स्वाध्याय, न्यू मोराबादी,
राँची

www.bhojpurisahityangan.com

रेखा-चित्र

खाँटी-राजपूत

□ डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

एगो लगभग साढ़े छव फूट के अधवूढ़। माथ बेलचट। आनबेर के राजपूती कट मूँछ, आ गलगोछा, चिरूकी-गाय के खूर बरोबर, नाक-बेडौल ऊँच आ लाम। पोशाक रही बदन प बारहो मास धोती, खाकी के हाफ कमीज, कान्ह प गमछी, गोड़ में पनही नदारद।

परिवार से कवनो बात के लेके अनबन। बाप के बात लागि गइल, धर धरा गइल, गिरह परा गइल। फेरू खुलल ना। तीसन साल से गाँव के धरती धंगाइल ना। कई एक जगे नोकरी, बाकिर उहे सान के खिलाफ बोलला प हाकिमे के जीभ खिचाइल, पीढ पूजाइल। फेरू बरखास्त, दूसर आ तीसर नोकरी। हित-कुटुम्ब, आ गाँव-जवार के लोग अनेकन बेर आइल, सुलह करावे के असीम प्रयास भईल। बाकी ताशकन्द समझौता लेखा परिवार से समझौता ना हो सकल। हरमेस वियतनाम युद्ध नियन हृदय में शीत-युद्ध चलत रहल। एक बाप, एक बात के सिद्धान्त पर अटल।

जब कबो भेंट होई झूकि के प्रणाम चरण छू लिहल। उन्हुकर खानदानी गुन रहे। जब बात करिहें त हमेशा दाहिना हाथ मुँह के आगे रही जेह में ब्राह्मण के देहि पर थूक नू पड़ि जाय। उन्हुकर ख्याल रहे- ''जे ब्राह्मण आ गाय के इज्जत ना करे ओकर कल्याण नइखे हो सकत। ब्राह्मण के इज्जत करे वाला खाली खाँटी राजपूत रहल बाड़े। चाहे- राजा राम होखसु भा उन्हुकर बाप दशरथ जी, चाहे कृष्ण होखसु भा राजपूत राजा-महाराजा। ई हमनी के बड़पन के निसानी ह। हम नवका राजपूत ना हईं पंडित जी, हम खाँटी पुरनका राजपूत हईं।''

उन्हुका विचार से इ दुनिया सराय ह। एहिजा आदमी कुछेक दिन टीके आ आपन कर्त्तव्य पूरा करे आइल बा। सराय में ढेर चीज बतुस राखल नादानी ह। एह से उ घर में एगो कमरा लोटा, थारी आ एगो बाल्टी से अधिक कवनो समान ना रखले।

इनकर खिवाअल गाय केहू राखि ना पाई। जतना अपना खाये में खर्च ना होई ओकरा तिगुना गाय के दाना पानी में। रोज गाय माता के पूजा आ सेवा के छोड़ि के मूर्ति पूजा ना होई।

एक दिन फूटपाथ प बइठल एगो कपड़ा के दुकानदार से गमछी मंगाइल। उन्हुकर वेस-भूसा देखि के ऊ साधारण गमछी देखवलसि। ओकरा से बढ़िया मंगाइल, फेरू ओकरो से बढ़िया। दोकानदार घमंड से बोलल- ''जा-जा तोहरा से गमछी ना किनाई।'' राजपूती शान भड़क उठल- 'का कहले हा ? ते अपना पूरा दोकान के दाम बोलु।' दोकानदार झट दे तमकि के कहलसि- 'दू हजार रोपेया, बा चेर में दाम?' ओही खाकी के हाफ कमीज के बगली से दू हजार रोपेया निकाल के फेंका गइल आ ओकरा दोकान के मोटरी बन्हा गइल। दुकानदार उन्हुकर गोड़ छनले गिड़गिड़ात रहे- 'माफ कइल जाउ बाबू साहेब, हमरा से गलती हो गइल। हई आपन रोपेया लीं। हमार सामान अधिका के बा।' बाकी अब कवनो सुनवाई ना। सुबह से दू पहर, तिसरा पहर आ फेरू साँझ हो गइल। दोकानदार गोड़े ना छोड़े। आखिर शरन में गिरला के उठावही के परल। बाकी एगो शर्त प। राम मंदिर में पाँच सौ रोपेया दान- एह गलत बोलेला के

(शेष पृष्ठ 5 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

वसन्त

□ रामप्रसाद साह

सिसकावत पूर्वैया वसन्त गोयड़ा आइल
अमराई में पतिया गिर गिर छितराइल

डेहुंगी में टुंसा लागल नवपल्लो लेके आई
केतनो क्षति भइल त का कर दिही भरपाई

भला चंगा होके हरियर चुनरी ली अंगड़ाई
यौवन पर जब पुगी वासन्ती मन ललचाई

तीसी मसुरी बान बदल फुलके कचनार
गोटा छिमी पकड़त जाई होके ई तइयार

गेहूं खाड़ रही बोलावत हाथ उठाके फगुआ
धावाधाई होय लागी केतना खाके अगुआ

मदमस्त करी महुआ चू चू के पसरी भूइंया
महुआ बिने गोरी चली सखि सलेहर गुइंया

वसन्त के मादक समय में घाव भी रसाला
मीट, मच्छरी जे खाय हियादत भी दियाला

कोयलिया कू कू बोले बिहिंन टीस मन मे
राह देखत नयन पथराइल आगि लागे तन मे

कलैया, नेपाल ●

गजल

□ पूनम शर्मा 'स्नेहिल'

उनसे बतवा भइल सौ सवाल हो गइल।
कइसे बोलीं का जियरा के हाल हो गइल॥

उ जे देखलस उ कोरवा से कनखी नजर।
मिल के उनसे नजरिया बवाल हो गइल॥

जोर जियरा पे तनिको न चलल हमार।
जिया उन पर हमार ई निहाल हो गइल॥

लाख कइलीं जतन मन ई ओझराए ना।
छन में जिनगी हमार ई बेहाल हो गइल॥

मुड़ के देखलस उ हमका कहीं तो से का।
उनके देखते ही अरमाँ उबाल हो गइल॥

छूटल हथवा से उनकर जे हथवा हमारे।
सब्बे बतिया ऊहाँ पर ख्याल हो गइल॥

साथे उनके (पूनम) जे गुजरल ऊ चार पहर।
उहे बेरिया ई जिनगी निहाल हो गइल॥

●

(पृष्ठ 4 का शेषांश)

जुर्माना। लोग देखि के चकित रहे। चौकीदारी करे वाला के पास अतुना रोपेया ? ओकरा कमीज के जेबे में बैंक ?

ना उधो के लेना ना माधो के देना। दूनो जून के खर्ची दूनो जून नगद खरीदना। उनुकर सी-सिफ्ट ड्यूटी रहे। रात के आठ बजे आध-सेर पिसान आ पाव भर परवर गमछी के खूट में बन्हले बाजार से डेरा बनावे खाये चललें। बाकी ड्यूटी ना आ सकलें। पूरा सर्विस में कबो नागा ना करे वाला बाबू साहेब के ओह दिन नागा हो गइल। सुबह लोग देखल सड़क के किनारे उ असहीं निरभेद हमेशा खातिर सूतल बाड़े। चेहरा प उहे रोब, शरीर भाला आ चाकू से छलनी भइल। खून के धार जमीन प बहि के सूख गइल रहे। पिसान आ परवर छिटाइल रहे। ना बेरामी ना हेरामी। भला अइसन मउअत। के आ काहे मारल ? सभ के मुँह प इहे सवाल रहे।

स्वर्णरेखा नदी के मुर्दघटिया प उन्हुकर लाश फूँकाइल बा। आपन केहू सवांग मुँह में आगि देबे वाला नइखे, एह से पंचमुखी आग परल। आग के लपट धह-धह करत आकाश छूवत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

आलेख

बदलत परिस्थितियन में भारतीय नारी

□ डॉ० महामाया प्रसाद 'विनोद'

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जवना देश के आदर्श रहे ओह देश भारत में प्राचीन काल में नारी के माई का रूप में स्वर्गों से बढ़ के मानल जात रहे। नारी के केहू रथ के धूरी कहे त केहू पुरुष का संगे रथ के दोसर पहिया।

वैदिक काल में नारी के पढ़े-लिखे के संगे- संगे अपना पसंद से बिआहो करे के आजादी रहे। पतंजलि आ कात्यायन जइसन व्याकरणविद् वैदिक काल में औरतन के शिक्षा देबे के व्यवस्था के समर्थन कइले बाड़े। बिआहो पूरा व्यस्क भइले पर होत रहे। ऋग्वेद के अनुसार लोपामुद्रा के पिता उनका खूब पढ़ा-लिखा के विद्वान बनवले आ ऊ अपना पसंद से अगस्त्य ऋषि से आपन बियाह कइलीं। एही कालखंड में गार्गी संस्कृत सहित अनेक शास्त्रन के अध्ययन के अलावे शास्त्रार्थों कला में निपुनता हासिल कइलीं। बाल्मिकी रामायण के कैकेयी अपना पति राजा दशरथ का संगे युद्धो में भाग लेले रही ! द्रौपदी के अपमान के बदला विराट महाभारत युद्ध नारी के महत्ता प्रदर्शित करेला। कहीं-कहीं नगर-वधू के सम्मानितो पद देबे के परंपरा रहे। दुनिया के पहिल गणतंत्र वैशाली के आम्रपाली एकर उदाहरण बिया। यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानन में मरद का संगे पत्नी का रूप में औरत के रहल जरूरी रहे। नारी माई, बहिन, पत्नी के रूप में समाज आ धर्म में प्रतिस्थापित होत रहे। ई कालखंड नारी के जिनगी के उत्कर्ष काल रहे ।

नारी के जिनगी के उत्कर्ष काल के बाद ईसा पूर्व 500 से औरतन के स्थिति में गिरावट के शुरूआत भइल। एह गिरावट में 'मनुस्मृति' जइसन स्मृति ग्रंथन के ढेर योगदान रहे । विदेशी आक्रमण का संगे समाज, शिक्षा आ संस्कृति पर जबरदस्त प्रहार शुरू भइल। मुगल काल में आक्रमण के बाद जवना राज्य पर जीत हासिल होत रहे ओह राज्य से औरतन के उठा लिहल जात रहे संगे-संगे बलात्कार आदि घृणित कुकर्म होत रहे। बहु विवाह के सहारे हरम में अनेक नारी के राखल जात रहे। मुस्लिम शासन में औरतन के कठोर परदा प्रथा के दंश झेले के पड़त रहे। एह पर्दा प्रथा के अलावे बहु विवाह, तीन तलाक, हलाला आदि मरदन का हाथ में औरतन पर अत्याचार के नग्न तलवार बन के लटकत रहे। बाल विवाह में कच्चे उमिर में लइकी के बिआह क देल जात रहे। सतीप्रथा में पति के मुअला पर उनका संग सती बनके जान देबे के पड़त रहे। राजस्थान के राजपूत समाज में पति के मुअला पर उनके चिता पर जले के पड़त रहे जेकरा जौहर कहल जात रहे। विधवा के पहनावा-ओढ़ावा, खान-पान, रहन-सहन पर एतना प्रतिबंध रहे कि ऊ घुट-घुट के जीए पर मजबूर रहे। मंदिर, मठ, धार्मिक स्थानन में देवदासी प्रथा के प्रचलन रहे। देवदासी के रूप में औरतन के मंदिर, मठ में अविवाहित सन्यासिन बन के रहे के पड़त रहे। जहवाँ देव दासियन के यौन शोषण के शिकार बने के पड़त रहे। बाल-विवाह, सतीप्रथा, जौहर प्रथा, देवदासी प्रथा आदि नारी पर अत्याचार के औजार बनल। कुल्हि कुप्रथा के बादो कुछ अइसन नारी रहलीं जे इतिहास में आपन स्थान बनावे में सफल रहलीं। दिल्ली

www.bhojpurisahityangan.com

के तख्त पर रजिया सुल्तान के शासन, गोंड के महारानी दुर्गावती के मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ खाँ से लड़त जान गँवइला के पन्द्रह बरिस तक शान से चलावल, 1590 के दशक में चांद बीबी के मुगल सेना से लड़ के अहमद नगर के रक्षा कइल एकर उदाहरण बा।

कालक्रम में नारी के जिनगी में क्रांतिकारी बदलाव के बयार गँवे-गँवे बहे के शुरू भइल। राजा राममोहन राय जइसन समाज सुधारक सती-प्रथा के खिलाफ आन्दोलन के जनम देलें। एह कुप्रथा के अन्त खातिर कानून बनल आ नारी के जिनगी के एगो नासूर पर नश्तर लागल। महर्षि दयानन्द बाल विवाह पर रोक लगावे खातिर सफल लड़ाई लड़लें। गाँधी जी आजादी के लड़ाई के संगे नारी के दशा में सुधारो के आन्दोलन चलवलें। आगे चल के संविधान के अनुच्छेद 15 में जाति, धर्म आ लिंग के आधार पर असमानता के अंत भइल, 16 (1) में अकसर के समानता, 19 (1) में समान रूप से अभिव्यक्ति के अधिकार, 23 (घ) में शोषण के विरूद्ध अधिकार आदि औरतन के अपना पैर पर खड़ा होखे के ताकत प्रदान कइल। पहिले नारी के भोग के वस्तु समझल जात रहे। बदलाव के बयार में दहेज-प्रथा, यौन उत्पीड़न, बाल विवाह, वेश्यावृत्ति आदि नारी उत्पीड़न पर विराम लागल।

1857 के क्रांति के बाद पुनर्जागरण के नेयो पड़ल आ अनेक सुधारवादी आंदोलन के जनम भइल। रूढ़िवादिता आ अंधविश्वास के चूड़ हिले लागल। स्वतंत्रता आन्दोलन में नेताजी सुमाष चन्द्र बोस के आजाद हिन्द फौज में सेनापति लक्ष्मी सहगल, विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजनी नायडू, सिस्टर निवेदिता, मैडम भीका जी कामा, सुचेता कृपलानी, मीरावेन, कमला नेहरू आदि के भूमिका कवनों मरद से कम ना रहे। जइसे झाँसी के रानी लक्ष्मीबाई पति के मुअला पर खुदे घोड़ा पर चढ़के लड़ाई के मैदान में उतरल रहीं वोइसहीं बिहार के सारण जिला में बहुरिया रामस्वरूपा देवी स्वतंत्रता सेनानी पति के मुअला पर अगस्त क्रांति में आंदोलन के नेतृत्व करत अंग्रेजी फौज के सात गो टॉमियन के निहत्थी जनता द्वारा मौत के घाट उतरववले रही। तारा देवी पति का मुअला पर हाथ में तिरंगा उठा के क्रांति में कूदल रहीं।

तब के बात कुछ आउर रहे। अब युग परिवर्तन का संगे युगीन चेतना के लहर हिलकोरा खाए लागल। राजनैतिक दृष्टिकोण, सामाजिक चेतना आ आन्दोलन के प्रभाव में कानूनन सती प्रथा, देवदासी प्रथा, बाल विवाह, जौहर-जइसन कुप्रथा पर रोक लगावल गइल। नारी पर अत्याचार के एगो लमहर हथियार पर प्रहार दहेजो प्रथा पर प्रतिबंध लगा के कइल गइल बा। तीन तलाक के कुप्रथा पर रोक खातिर कानून बनल। भारतीय संविधान द्वारा औरतन के समानता के अधिकार मिलल। समान काम खातिर समान वेतन के प्रावधान भइल। आधी आबादी खातिर संसद आ विधान मंडल में 33 प्रतिशत आरक्षण के विधेयक संसद में आइल। बिहार में पंचायत में 50 प्रतिशत आरक्षण मिल चुकल बा। आज शिक्षा, समाज सेवा, प्रशासनिक सेवा, न्यायिक सेवा, राजनीति, अंतरिक्ष विज्ञान, खेल-कूद से लेके पुलिस आ सेनो में औरतन के प्रवेश हो चुकल बा। आज पंचायत से लेके विधान मंडल, संसद, राजभवन, राष्ट्रपति भवन, केन्द्रीय आ राज्य मंत्रिमंडल में नारी आसीन हो चुकल बिया।

www.bhojpurisahityangan.com

नारी के बदलल स्थिति देख के विवेकानन्द के कथन ''वह उठेगी और समस्त विश्व को अपनी जादुई कुशलता से चमत्कृत करेगी।'' सार्थक साबित हो रहल बा।

आज नारी जल, जमीन आ आसमान में आपन करिश्मा उजागर कर रहल बिया।

आज नारी के सशक्तिकरण खातिर भारत में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'स्वयं सहायता समूह योजना', सामुदायिक संस्थन के विकास, आजीविका योजना, बैकिंग सुविधा, चिकित्सा आ शिक्षा में सुविधा के अनेक योजना सरकार द्वारा संचालित हो रहल ह। नारी के स्थिति में सुधार खातिर अनेक प्रगतिशील रचनात्मक कदम उठावल जा रहल ह। एह दिशा में 'नारी शक्ति बंदन अधिनियम' संसद आ विधान सभा में 33% आरक्षण के विधेयक के प्रस्तुति एगो सार्थक कदम ह।

अब मैथिली शरण गुप्त के ई पाँति अर्थहीन भ गइल ह –

''अबला जीवन तेरी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।''

अध्यक्ष,
अ. भा. भो. साहित्य सम्मेलन,पटना
विधान परिषद् आवासीय परिसर
आवास सं० – 27, आर–ब्लॉक,
पटना–800 001

●

गजल

□ शैलेन्द्र पाण्डेय 'शैल'

(1)

केकर दूध आ केकर पानी
छोड़ऽ अब ई राम कहानी।

डलले खूब शिकारी दाना
छोड़लिन सऽ चिरई नादानी।

प्यास का सबकुछ मालुम बाटे
रेत का अन्दर केतना पानी।

आखिर फांसी तक ले आइल
हाकिम राउर मेहरबानी।

धुआँ–धुआँ बा फूल के घाटी
गलि गइले बाबा बर्फानी।

काला पानी गइल कबूतर
बाज बा हथियवले रजधानी।

'शैल' कहीं त होई ठिकाना
होई कहीं त दाना–पानी।

(2)

आज भर साथ बा काल्हु जाई
केहू रो–रो के अंचरा भिगाई।

सब के भीतरे लुकाइल बा रावन
रामनामा से केतना तोपाई।

भाग में आगि सासुर के लागल
दुख नइहर में कब ले कटाई।

बीच रहता सभे साथ छोड़ल
कइसे जिनगी अकेले ढोआई।

पीर दोसरा के ऊ खाक बूझी
जेकरा तरवा न फाटल बेवाई।

'शैल' उघटेला दोसरा के फूली
आपन ढेंढ़र न देला देखाई।।

●

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

सुगिया रानी

□ अयोध्या प्रसाद उपाध्याय

दिन तारीख तऽ नइखे याद बाकी बात लगभग बीस बरिस पहिलहीं के ह। जब हम गाँवे सोन के किनारे घुमत रहीं। बगले में आम के बगइचा रहे। ओकरा के धनकी बगइचा के नाम से जानल जात रहे। एकर वजह रहे। बहुत अधिका पेड़ रहे जवना से दिने में अन्हार रहत रहे।

आम मोंजराइल रहे। गम गम सगरो गमकत रहे। कतहुं कतहुं टिकोरा लउकत रहे। कोइलरि के कुहुकल कबो कबो सुनाई देत रहे। गाय भइंस चरत रही। चरवाहा लोग आराम करत रहे । एगो लइका के पेड़ पऽ चढ़त देख के हम पूछनीं – '' ए बबुआ मत चढ़। गिर जइब। काहे चढ़त बाड़।'' ऊ कहले –''सुग्गा बाचा देले बा। खोंढ़रा में से निकाले खातिर चढ़त बानीं।'' एह बात के सुन के हम चुप हो गइनीं।

अबहीं दु चार दिन पहिलहीं हमार पोता मंगल सुग्गा पोसे के कहत रहे। हमार मन में लालच आ गइल। सोचे लगनीं। एगो हमहूं मांगब। पइसो दे देब। जब घरे ले जाइब तऽ अचानके देखि के बबुआ खूब खुश होखि। बाकी घर में पिंजड़ा नइखे। रही कहंवा। समस्या हो जाई। अच्छा एक दु दिन एही तरह से काम चली। बाद में नासरीगंज से मंगवा लेब।

इहे सभ सोचते रहीं तबहिंयें गमछा में चार गो सुग्गा के बाचा ले के पेड़ से उतर गइल। हम ओहनी के देख के खुश भइनीं। हमहुं पच्चीस रोपेया में एगो खरीद के घरे गइनीं। बबुआ मंगल खूब खुश हो गइल। पिंजड़ो बिहाने खरीदा गइल। ओह में दुइगो कटोरियो रखा गइल। एगो में पानी आ दोसरा में दूध भात। अबहीं ओकरा देहिया पऽ रोंवाँ निकलत रहे। खोंढरा के जीव के पिंजड़ा में राखल कवनो साधारण बात ना रहे। नाजुक देह गरमी के दिन। ओहु में माई बाबु से अलगा। ई स्थिति पीड़ादायक बा। बाकी लोभ–लालच जवन ना पाप आ कुकरम करवा देबे। अजब दुनिया बा। ई सभ कुछ जान के अनजान बन गइनीं आ पोता खातिर ओह बेपांख के बच्चा के ले अइनीं। धिक्कारी अपना के तऽ कइसे। तरीका हमरा बुझात नइखे। बाकी धिक्कारलो जरुरिये बा।

मंगल दउड़त अइले। कहले–'' बाबा आजु सुगिया रानी के खाये के महुआ देनीं हं। आ ऊ खात रहे। हम ओहिजे रहीं। चार गो खा गइल। अउरी पनियो पीअलस ह।''

मंगल के बात सुन के हमरा बुझा गइल कि सुगिया रानी के जीवन के शुरुआत हो गइल। शरीर पर रोआं पूरा जाम गइल। एकदम हरिअर देह हो गइल। बोली टनक रहे। आ कुछ दिन के बाद तऽ बोले के नकलो करे लागल। जे जवन कहे उहो कहे लागे। पहिले तऽ लोग खूब खुश रहे। बाद में लोगन के ई बेवहार खराब लागे लागल। घर के बात केकरो से कह देबे जे पूछत रहे। ओह परिवार खातिर सुगिया रानी एगो बडहन समस्या हो गइली।

अब हम करीं तऽ का करीं। सभ केहू के कहत रहीं, समझावत रहीं। ठीक से बोले बतिआवे के काम बा। कवन संस्कार ले के सुगिया रानी घर में आइल बाड़ी एकरा के भगवाने जी जानत बानीं।

मंगल के सुगिया रानी सुबह में जगा देत रहली। घुमे जाये के, खाये जाये के, स्कूल जाये के कहत रहली। मंगलों हर

www.bhojpurisahityangan.com

घड़ी उनुकर सेवा टहल में लागल रहत रहन। समय पर भोजन पानी देत रहले। उनुकर सुख दुख के समझत बुझत रहले आ ओकरा के दूर करे के उपाय करत रहले। उनुका से जब होखे लायक ना होखे तऽ हमरा से कहत रहले। एह तरह से सुगिया रानी अब हमरा परिवार के अभिन्न अंग हो गइल रही।

एक दिन हम कहीं जात रहलीं। सुगिया रानी देखली तऽ बोलवली। पूछनीं का हऽ। तब कहली –''जुग जबाना बहुत खराब बा। हिसाब किताब से बोलीह बतिअइह। हिसाबे से कतहूँ अइह जइह।''

अगल-बगल में सभ केहू सुगिया रानी के जान गइल रहे। इनकर गुन अवगुन से सभे परिचित हो गइल रहे। आ संयोग के बात कि सुगियो रानी बहुत लोग के जानबूझ गइली।

हम सांझ के घर जब अइनीं तब सुगिया रानी कहली –''काल्हु एगो अदिमी आई आ रात भर रहे के कही। तू ओकरा के घर में मत रहे दीह।'' हमार जिज्ञासु मन जाने के कोशिश कइलस बाकी कवनो तरह से ना बतवली। मन एह रहस्य के जानल चाहत रहे। अकुलाहट बनल रहे। हरदम एकरे चिंता लागल रहे। रात में नींद ना आवत रहे। सोचत सोचत कब द आंखि झपकल तऽ ऊ एके बे बिहने खुलल। सांझ होते होते एगो अदिमी कान्ही में झोरा लटकवले, अजीब तरह के दाढ़ी, लिलार पऽ करिया टीका, गरदन में हरियर रंग के कपड़ा लपेटले आ ओकरा ऊपर करिया धागा में बान्हल तबीज, अउरी आंखिन में सुरमा, हाथ में कड़ा पेन्हले हमरा सोझा खाड़ हो के कहलस – ''बच्चा आज मेरा काम नहीं हुआ। विलंब हो गया है। अब मैं वहाँ जा नहीं सकता। इसलिए तुम मुझे रात भर के लिए आश्रय दे सकते हो ?'' हम सीधे तौर पर इहे कहलीं –''ना, कभी भी ना।''

ऊ कुछ देर ले बुदबुदाइल। फेरु धीरे धीरे मुस्काइल। आहिस्ता आहिस्ता दक्खिन दिशा में चल गइल। कुछ देर तक जात लउकल एकरा बाद धुंआ जइसन हो गइल।

होत फजीर सुगिया रानी हमरा के बोला के कहली –''आज एगो बड़ संकट टल गइल। ई गैर सनातनी रहे। पिशाच के योनि से उबरल चाहत बा। एकर उधार हमहीं कर सकत बानीं। एकरा पता मिल गइल बा कि हम एही परिवार के एगो हिस्सा बन गइल बानीं। वोइसे ऊ मानीं ना तीन बरिस के बाद फेरु एहिजा अइबे करी। तब ले बहुत कुछ बदल जाई। घबराये के नइखे। इत्मीनान से रहे के बा।''

ई सभ सुन सुन के हमार उत्सुकता बढ़ल जात बा। एकर जवाब कइसे मिली, के दिही एही उधेड़बुन में पड़ल रहीं। तबे आवाज आइल हरि जी आईं। दउड़ल सुगिया रानी के सोझा हाथ जोड़ के खाढ़ हो गइनीं। कहली ''तोहार ललक बा कुछ जाने समझे के। तऽ सुन बहुत पहिले हम एह राज के रानी रहीं। इहे हमार रनिवास रहे। जेकर जइसन करम धरम ओइसन फल। कवनों चूक भइल रहे जवना चलते हम सुग्गा पंछी के घर में जनम लिहलीं। काल्हू जवन गैर सनातनी आइल रहले ऊ हमार मंत्री रहन। आपन पुरखन के पितरपख में कबहिंयों पानी ना देले रहन जेकरा वजह से ऊ पिशाच बन के भटकत बाड़न। तीन साल के बाद जब ऊ अइहें तब सनातनी के रूप में अइहें। सभ कुछ बदलल लागी। हमहूं ना रहब। हमरो योनि बदल जाई। एकरा खातिर हम प्रायश्चित कर रहल बानीं जवन आज पूरा हो गइल। मंगल बाबू राजा रहीं। हमार खूब ख्याल राखत रहीं। मंगल के हाथ पकड़ के सुगिया रानी खूब रोवली आ उनुके हाथ प लुढ़क गइली। Z

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

एस० पी० मैडम

□ डॉ० रागिनी भूषण

हमार जनम भूमि लक्सर उत्तराखंड ह। हमरा घर से दु-तीन घर छोड़ के एगो छोट घर रहे जवना में दू कमरा आ एगो बरामदा रहे। बरामदा में ही एक किनारे ओटा रहे। ओह घरी उहवे रसोई रहे। ओही घर में चन्दरबती ताई रहत रही। गांव-दियारा में केहू से संवाद करे खातिर कवनो न कवनो आत्मीय सम्बोधन से ही बतियावे के परम्परा रहे। गांव के सब लोग उनका के ताईजी कहत रहे। उनका तीन गो बेटी रहली स। तीनों जानी एक से एक सुन्दर आ मोहक रही लोग। बड़की लइकी नौ बरीस के रहली जेकरा के ऊ बबुनी कहत रहली। लम्बा आ अन्हरियो से करिया कुचकुच केस, हिरनी जइसन आँखि, धप-धप गोर रंग देखेवाला के बरबस मन मोह लेत रहे। उनकर बाबू जी ना रहले। माई भोर से सांझ तक जमींदार लोग के हवेली में काम करत रही। ओही से परिवार चलत रहे। बाकी हवेली से जतना मिलत रहे ओह से घर मुस्किल से चलत रहे। कभी रात में भोजन मिलल त दिन में ना, कभी दिन में मिलल त रात में ना। दूनो बेरा चूल्हा ना जरि पावत रहे। पढ़ाई-लिखाई के त सवाले ना रहे। महतारी दिन भर जमींदार के घर में काम करत रही आ इहाँ बबुनी घर सम्हारत रही। चूल्हा-चउका, बरतन-भाँडा, सब उनके भरोसे। अइसहीं परिवार के गाड़ी चलत रहे।

बबुनी जब दस बरिस के भइली, तबे एक दिन उनकर कुण्डली ही बदल गइल। माई कवनो काम से दियारा से बाहर गइल रहली। इहाँ बबुनी दूनो छोट बहिनन के घर के भीतर कर दिहली आ बाहर से कुण्डी मार के कुआँ से पानी भरे चल गइली। गरमी में दुपहरिया के घाम, गरम हवा का लूके चलत रहे। सड़क एकदम सून-सन्नाटा हो गइल रहे। उहाँ कुआँ के जगत पर जमींदार के लइका पहिलहीं से उनका ताक में लागल रहे कि कब बबुनी से मिले के मौंका मिले। बाकी बबुनी के ओकरा पर दूरे से नजर पड़ गइल। ऊ ओकर मनसा भांप गइली। ऊ कवनो तरीका से बच-बचाके घर आ गइली। ऊ जमींदार के बेटा रहे। गांवं में केहू अइसन ना रहे जेकरा मन में ओकर डर ना होखे। बबुनी के माई के गरीबी आ अभाव त पहिलहीं से रहे, अब ई दोसर चिन्ता अउर आ गइल। अब त माई जोर-सोर से बबुनी के हाथ पीयर करे के कोसिस करे लगली। लगभग सप्ताह भर बाद बबुनी के मउसी एगो रिस्ता ले के अइली। लइका के रिस्ता ना, अदिमी के रिस्ता, कहीं कि एगो अधेड़ बुढऊ के रिस्ता। बेचारी दस साल के बुचिया का जाने ई रिस्ता भविष्य में नरक के दुआरी बन जाई। माई त ऊ जमींदार के लइका से बचावे खातिर ई बियाह तुरंते कर दिहली। उहाँ ऊपर से पइसो मिलल। एक तरह से माई बबुनी के बेच दिहली। अइसन मजबूरी रहे कि का करती...?

बबुनी के ससुरार में सास बहुते खूंखार रही। बात-बेबात टोकत रहत रही। ओने ओकर बुढऊ अदिमी चाहत रहे कि कवनो तरीका से बबुनी ओकरा बेटा के माई बन जासु। एह खातिर दुनू जन मिल के बबुनी के ताबड़तोड़ पिटाई करत रहे। रोज-रोज

www.bhojpurisahityangan.com

के मारपीट से बबुनी के मन में बार-बार आवत रहे कि घर से कहीं भाग जाईं। कई बार मरहूं के प्रयास कइली, बाकी जनम-मरण अपना हाथ में थोड़े बा...। अइसे होत-होत बबुनी के एक दिन खूब उल्टी भइल। ओह दिन ऊ दिन भर कुछ ना खइली। ओकर अइसन हालत देख के सास आ बुढऊ तनी नरम भइल लोग। कहत रहे लोग कि डॉक्टर के देखावल जाई। ओह घरी ऊ लगभग बेहोस रहली। डॉक्टर बतवलस कि ई त माँ बने के लच्छन बा। बबुनी के त होसे ना रहे, बाकी माई-बेटा दुनू खुसी में डूबत-उतरात घरे आ गइल लोग। एकरा बाद बबुनी पर अत्याचार तनिका कम हो गइल, बाकी नौ महीना बाद जब बचिया के जनम भइल, ओकरा बाद से मतारी-बेटा मिल के रात के अन्हरिया में ओह बुचकी अइसन जान के मार देबे के योजना बनावे लागल लोग। एक बेर अमावस्या के अन्हरिया रात में, जब सभे अपना-अपना घर में सूतल रहे आ बेचारी बबुनी त अइसहीं निरीह परानी रही, ऊपर से बुचिया के जनम के बाद मतारी-बेटा के अत्याचार आउर बढ़त जात रहे। एकरे कारण बेहोसी जइसन नींद में मतारी-बेटा दुनू जने बचिया के गला घोट के मार दिहल आ कुछ दूर नाला में ले जाके फेंक दिहल लोग। बबुनी जरा होस में अइली त अपना बगल में बचिया के ना पा के बेचैन हो गइली। एने-ओने खोजत ऊ पूछे खातिर बाहर अइली, त मतारी-बेटा दूनों जन गायब...! अब त सक पक्का हो गइल। ऊ पुका फार के रोए लगली। रोअत-रोअत पागल होखे लगली। ना अपना कपड़ा के होस रहल ना अउर कुछ के। ऊ आपन केस नोच-नोच के जमीन पे लोटाए लगली। उनका करेजा के टुकड़ा के नाली में फेंक देले रहे लोग। बबुनी दउरल-दउरल नाला के पास जाके खोजली, बाकी तब तक ऊ बुचिया के देह उहां से बह के दूर चल गइल रहे।

बबुनी अपना करेजा के टुकड़ा के खोजत आगे बढ़त जात रहली। रात बीतल जात रहे, बाकी नाला में बुचिया के कहीं नामोनिसान ना देखाई देत रहे, जवना से ऊ निरास होखे लगली। बाकी कहल जाला नू कि होनी के केहू ना टार सके। बबुनी के जवना साड़ी के टुकड़ा में बांध के बुचिया के मुअल समझ के ओकर बाप नाला में फेंक आइल रहन, ओकर माई के ओही टुकड़ा के मोटरी नाला के किनारे अँटकल लउक गइल। ऊ बिना आग-पाछ सोचले कूदि के मोटरी छान ले अइली आ बुचिया के ले के छाती में चिपका के बइठ गइली। मतारी के सरीर के गरमाहट से बुचिया के देह में दोबारा जान आ गइल, बुचिया जी गइल।

एकरा बाद बबुनी दोबारा ओह घर के दुआर ना देखली। बुचिया के जिंदा पा के उनको भीतर एगो अजगुत ताकत आ गइल रहे। ओही हालत में ऊ केहू-केहू के घरे जा के काम करे लगली। समय बीतत गइल आ बुचिया सेयान होखे लागल। बुचिया के बड़ आदमी बनावे खातिर बबुनी छोट-मोट जवन काम मिल जाय कर लेत रहली। भगवान उनका तपस्या के फलो खूबे दिहलन। आज ऊहे बुचिया एसपी बन के अपने जिला में तैनात भइल बाड़ी। खूब ईमानदार आ तेज-तरार एसपी के रूप में उनकर खूब नाम हो रहल बा। आज ऊहे बुचिया के, माने एसपी मैडम के जनम दिन बा, आ ओह भयंकर हत्या कांड के बरसी भी, जवना के गुनहगार, अपना बाप के एसपी मैडम जेलो भेजवा चुकल बाड़ी...।

●

www.bhojpurisahityangan.com

लघुकथा

पतिबरता

□ रिम्मी

बहुते दिन से छोटे के मन में एगो बात घुमता। उ एकरा बारे में पुछे के त चाहत बाड़े बाकिर पूछसु त कइसे इहे नइखे बुझात! आज भोरे भोरे फेरू जब मामी सुरुज के जल चढ़ावत घरी उहे प्रार्थना कइली–''हे प्रभु हमरा से पहिले डॉक्टर साहेब के उठा लीं'' तब छोटे से रहल ना गइल। उ आपन मामी के टोकलें ''ए मामी ई कइसन प्रार्थना करतानी! मामा खातिर, एक तरफ त रउआ दिन रात लागल रहिला मामा के सेवा में, दूसर तरफ भगवान से ई प्रार्थना करीले कि भगवान उनका के रउआ सामने उठा लेसु! दस गाँव में रउआ अइसन केहू ना जे आपन बुढ़ापो में आपन पति के अतना सेवा करत होई। रउआ अपना बारे में कहियो ना सोचींले। सबके सामने रउआ एगो आदर्श बानी। गाँव के लोग त रउआ के सीता सावित्री के दर्जा देबेला। लेकिन राउर ई प्रार्थना हमरा समझ से बाहर बा। आज हमरा ई जाने के बा कि राउर ई प्रार्थना के पीछे का कारण बा ? सभे टोला महल्ला रउआ के पतिबरता समझे ला!'' इ कहिके छोटे चुप हो गइले।

कुछ देर तक त चुप्पी छा गइल– फेरु मामी कहली ''आछा ई बात बा बबुआ'' अउर हँसे लगली। छोटे चिड़चिड़ा गइलन, खिसिया के कहलन– ''हम रउआ से कुछो पुछतानी मामी।'' अब बारी रहे चम्पा देवी के जबाब के। उ जवन कहली ऊ सुनके छोटे नतमस्तक हो गइले। मामी कहली– ''सुनी ए बबुआ–बिआह में इहे बचन नु एक दुसरा के दिहल जाला कि पत्नी जीवन भर पति के साथ दे उनकर सेवा करे।'' ''हाँ एही से त हमहूँ समझ नइखी पावत'' छोटे मामी से कहलन। मामी फेरू हँसली आ उनका से कहली ''ए बबुआ पहिले ई त बताई कि, राउर मामा आपन कवनो काम अपने से कर सकेले!''

''ना'' छोटे कहले। तब मामी कहली ''एही से ए बाबू, हम ई प्रार्थना करीले। काहे से कि हम राउर मामा के जाये के दुःख सह जाइब। बाकिर हमरा बाद उनका कवनो तरह कोई कष्ट होखे ई ना सह सकब। ई सुनके छोटे कहले ''ई रउआ का कहत बानी मामी आठ–आठ गो बेटा पतोह बाटे घर में, का ऊ लोग मामा के ना देखिहे?'' तब मामी कहली ''बेटा पतोह सभे बा, ए बबुआ सभे सेवो करी। लेकिन दुन्नो के तकलीफ होई, अउर इहे हम ना चाही ले कि डॉक्टर साहेब के कवनो तरह के तकलीफ होखे हमरा जाये के बाद। हमहूं कवनो अमृत के घोट त पीके आइल नइखीं। हम त बस अतना चाहिले कि जवना वचन हम भगवान के सामने डॉक्टर साहब के देले बानी कि हम –उनकर साथ कबो ना छोड़बि, चाहे जीवन में कवनो मोड़ आवे। त अब राउरे बताई ए बबुआ कि का हमार ई प्रार्थना उचित नइखे ?'' ई सुनिके छोटे के काठ मार गइल। उनका आँखि से झर झर लोर बहे लागल। भरल गला से हाथ जोड़ के ऊ इ कहले ''मामी हम जरूर कवनो बहुत बड़का पुण्य कइले होइबि एहि से रउआ अइसन 'पतिबरता' के दर्शन भइल।

ई सब सुनिके अब त मामियो रोये लगली छोटे के हाथ पकड़ के।

राँची (झारखंड) ●

www.bhojpurisahityangan.com

हं हम भाषा भोजपुरी हईं

□ राम प्रकाश तिवारी "ठेठबिहारी"

आवऽ एगो बात बताई
गाथा तोहके आपन सुनाई
दुल्हीन के हाथ के चूड़ी हईं
कोहबर के दलही पूड़ी हईं
मिश्री से मीठ मिठाई हईं
मीठा के बनल लकठो हम
सुरुका चिउरा आ चिउरी हईं
हंऽ हम भाषा भोजपुरी हईं।

अहिल्या के तारण हईं
राजेन्द्र के सारण हईं
जेपी के आंदोलन हईं
गांधी के चम्पारण हम
राजनीति के धूरी हईं
हंऽ हम भाषा भोजपुरी हईं।
कुंवर सिंह के हूंकार हईं !
मंगल पांडे के यलगार हईं
अब्दुल हमीद के कुर्बानी हईं
हरदम उफनत जवानी हम
देशप्रेम से परिपूरी हईं
हंऽ हम भाषा भोजपुरी हईं।

अंजन-प्रदीप के गीत हईं
चित्रगुप्त के संगीत हईं
बिस्मिल्लाह के तान हईं
महेंद्र के पूर्वी गान हम
रंगमंच के भिखारी हईं
हंऽ हम भाषा भोजपुरी हईं

बनारस के घाट हईं
सोनपुर के हाट हईं
गंगां-सरयू के पाट हईं
राष्ट्र के उन्नत ललाट हम
मस्त ठाट फकीरी हईं
हंऽ हम भाषा भोजपुरी हईं।
सोहर झूमर खेलवना हईं
बोली भाखा के गहना हईं
होरी चइता आ कजरी हम
आरा छपरा मिर्जापुरी हईं
ठेठबिहारी के माई भोजपुरी हई
हंऽ हम भाषा भोजपुरी हईं।

ग्राम+पोस्ट : भटकेसरी,
जिला : छपरा (बिहार)●

कुंडलियाँ

□ आरती श्रीवास्तव 'विपुला'

गोरी बात हमार सुन, हम बानी बिल्कुल पाख।
गुझिया ओरी देख के, चले पुआ के आँख।
चले पुआ के आँख, देख पूरी यह सिसके।
दहीबड़ा के संग डूब, चटनी अब बिहसे।
कटहल कोफ्ता करे, संग पूरी बरजोरी।
भांग घूलल बा हवा में, आव ना तू गोरी।।

गोरी बोलऽ आजु तू, कहाँ लगाई रंग ?
अंग-अंग बहुरंग बा, कइसे खेलीं संग।
कइसे खेलब संग, बिचारऽ ए हमजोली।
खाली मत चल जाय, प्यार के आपन होली।
तू बाडू चितचोर, करेलू हिय के चोरी।
मनवा होत अधीर, कहऽ मुख से कछु गोरी।

www.bhojpurisahityangan.com

आलोचना

असली धन-संपति त बाबूजी के जिनगी बा

(संदर्भ : डॉ० जयकांत सिंह के कहानी 'भंडारघर')

□ डॉ० विष्णुदेव तिवारी

(1)

अगर एगो पतोह अपना बेमरिता ससुर खातिर ई बात कहत बिया त आज के जमाना खातिर ई आँचर फइला के ओड़े वाली बात हो जात बिया। ई बात सब पतोह लोग ना कही- ई जथारथ ह, बाकिर कुछ पतोह जरूर अइसने कहिहें काहें कि उनकरा नइहर के संस्कार आ चलन आ उनकर विवेक, उनकरा बुद्धि आ हृदय के एह तरी तइयार कइले होई कि श्रद्धा, प्रेम आ आदर के लेहाजे उनका मन में, अपना बाबूजी आ अपना मरद के बाबूजी में कवनो फरक ना लउकत होई।

इहे भारत के परंपरा रहल बा। इहे भारत के संस्कार ह। भारत के हर सच्चा रहवइया एकरा के बचावे के जतन कइले बा। जब परंपरा आ संस्कार बँची तबे भारत बँची। जब भारते ना बँची त कुछ अउरी बँचा के होइबे का करी ?

परंपरा आ संस्कार रुढ़ चीज ना ह। ई बहत समय आ बहकत मन के बीच उपजत अन्तर्विरोधन में सामंजस्य बनावत अपना के सँवारत चलेला, जेसे ओकर अविनाशी रूप त जस के तस रह जाला बाकिर ऊपर वाला आवरण बदलत जाला, जइसे कलप-बिरिछ आपन सूखल आ मउराइलर पतइन के झार के नया पतई पहिर लेला।

भारतीय जीवन में परिवार के महातम अनादि काल से बा। भाई-भाई के बीच निहछल प्रेम आ निःस्वार्थ सहृदयता के उदाहरण परंपरा से मिलत आ रहल बा। एजवे एकर उलटो कम नइखे लखार भइल। भोजपुरी क्षेत्र में अक्सर कहल जाए वाली एगो कहाउत ''भाई अइसन हीत नूँ भाई अइसन दुश्मन'' एकरे इजहार ह।

साहित्यो में भाई-भाई के बीच के ई जटिल सम्बन्ध- नीको वाला आ बाउरो वाला- रेखांकित होत आइल बा।

बीसवीं सदी के नउआँ दशक के पूर्वार्द्ध में जयकांत सिंह के एगो कहानी, जेकर नाँव 'भंडारघर' ह, छपल रहे। कहानी चार भाइयन के एगो खात-पीयत परिवार के ह, जेमें मझिलू भाई विशेष रूप से बेईमान, धूर्त आ खली बाड़े। ओइसे शिवधारी काका के छोड़ के कवनों अउर जाना दूध के धोवल नइखन। खूँख करेज आ निमकहराम त तीनों जाना बाड़े- एक जाना शिवधारी काका से बड़ आ दू जाना उनका से छोट।

शिवधारी काका भाई आ उहन लोग के बाल-बच्चन खातिर जान देत बाड़े आ उहन लोग का आगा अपना अकेल लइका रजेसर के कुछ नइखन गदानत। रजेसर के अपना बाबूजी से कवनों शिकायत नइखे। ऊ शिवधारी काका के कहला पर खेती खातिर रुपयो-पइसा से मदद करत बाड़े।

रजेसर शहर के सरकारी विद्यालय में शिक्षक बाड़े आ जरूरत परला पर गाँवे आवत-जात रहत बाड़े।

www.bhojpurisahityangan.com

एक दिन मास्टर साहेब स्कूल से आके बिछवना पर ओठँघले रहले कि गाँव से बटेसर आके कहले कि शिवधारी काका के तबीयत ढेर खराब बा। ऊ हफ्ता भर ले खटिया पर परल बाड़े। नूँ दवे-दारू के व्यवस्था होता नूँ पथ्ये के। अब-तब के घरी बा। रजेसर सपरिवार धावा-धायी में गाँवे पहुँचत बाड़े आ सबसे पहिले अपना बाबूजी के जिनगी बँचावे के उदम में लाग जात बाड़े। डॉक्टर बोलावल जातारे आ चटपट इलाज शुरू हो जात बा।

गाँव के जुटान में रजेसर मास्टर के चाचा लोग कहत बा कि पइसा ना रहे एह से दवाई ना होत रहे, जे सरासर गलत बात बा। बैंक में रुपया ठकचल बा आ एहिजा जान के कीमत में झूठ उगिलल जात बा। शिवधारियो काका के भाई लोग का ओर से भरम टूटत बा। एही बीचे मास्टर साहेब भंडारघर में ताला हन देत बाड़े। मझिलू के पतया लाग जात बा। जवन काम रजेसर के परिवार के देख के ऊ करत रहले हा, उहे काम आजु रजेसर करत बाड़े।

कहानी के अंत बड़ा शांत बा- कवनों हरहर-पटपट ना, कवनो तूल-तलामत ना, नूँ कवनो क्रांति उद्घोष- जइसे गँवे-गँवे चलत नदी, ऊँच-नीच चलके समुद्र में मिल जाले आ जीवन के एगो जात्रा तय हो जाला।

मझिलू तमतमाइले पहिले सबसे बड़ भाई आ तब सबसे छोट भाई किहाँ जात बाड़े आ बड़ा ताव में बतावत बाड़े कि रजेसर भंडारघर के ताला बंद कर देले बाड़े, बाकिर ओहिजा से मुँह बिजुकउए जवाब मिलत बा। मझिलू के नटरपन हार नइखे मानत। ऊ पितपितइले मास्टर साहेब के बाबूजी के लगे आके उहे बात दोहरावत बाड़े। शिवधारी काका के हालत में सुधार लउकत बा। डॉक्टर के दवाई जबरदस्त फायदा कइले बिया बाकिर अबे बहुते कमजोरी बा। उनका आँखी का सोझा आजतक के मये बितलका हाजिर हो जात बा। ऊ एकदम धीरे-धीरे कहत बाड़े- ''अब हमरा से का पुछले बाड़ऽ भाई ? हम त मरिये नूँ गइल रहीं हँ। ई हमार नया जन्म भइल बा। रजेसर हमरा के काल के गाल से निकाल लिहले। आज ले हम उनका के बाप के सुख भलहीं ना दिहलीं, बाकिर ऊ बेटा के फर्ज पूरा कर के आपन अगिला रास्ता बना लिहलें। अब हम कुछ कहे के हकदार नइखीं। अब हमार मालिक उहे बाड़े। ओइसे रजेसर के संस्कार गलत ना ह। ऊ केहू के संगे अनेत ना कर सकस। आगे उनकर जवन मर्जी।''

बेईमान हद से बेसी बेहयो होला। मझिलू अब मास्टर साहेब से मुखातिब बाड़े, बाकिर मास्टर साहेब के साफ कहनाम बा कि ऊ आज ले घर से कुछ ना लिहले। सब चचे लोग हबेखल। अब ई सब ना चली। भंडारघर में जतना अनाज बाँचल बा ऊ सब हमरे हिस्सा के ह। ऊ सब जीप पर लदाई। इहे ना, अबकी जब लवटब त जमीनो जायदाद सब बँटा जाई।

ई सुनते मँझिलू चाचा के नाभ सरक गइल। मास्टर साहेब बगल में खाड़ एगो आदमी के चाभी थम्हावत कहलें, "आरे बबुओ, भंडारघरवा खोल के सभ चाउर आ रहर गाड़ी पर लदवा दे।''

अब एहिजे मास्टर साहेब के मेहरारू उपस्थित होत बाड़ी। एक बेर पहिलहूँ ऊ कहानी में आ चुकल बाड़ी, बाकिर ओघरी उनकर भूमिका खाली एगो सुनवइया के रहे। बाकिर, अब जब ऊ गाँवे आइल बाड़ी आ घर-परिवार के लोगन के कर्मनासा देखत बाड़ी, उनका रोख से पता चलत बा

www.bhojpurisahityangan.com

कि ऊ अपना मरद के एह कार्य से सहज नइखी।

अबे कुछे चाउर आ रहर लदाइल रहल कि ऊ मास्टर साहेब के दुरोखा में बोला के कहली, ''पगलाइल बानीं का ? अब रहे दीं। एतना चाउर-दाल का होई! हमनियों के अइसने मति-गति हो जाई त फरके का रही! ई सभ झंझट छोड़ीं। हमनी के असली धन-सम्पति त बाबूजी के जिनगी बा। उहाँ के लदवा के जल्दी डॉक्टर साहेब किहाँ ले चलीं।''

''भंडारघर'' एगो अइसन वृत्ति पर बात करत बिया जे नूँ खाली मानव-समाज के तह में बइठल बा बलुक सउँसे जीव-जगत में पाटल बा आ जे तनी मनी अँखफोर हो गइल बा ऊ निश्चित रूप से एकरा से पूरा परिचित हो चुकल बा। ऊ वृत्ति ह अपस्वार्थ, जेकरा कोखी अनेक विष लपेटल बँवर उपजेले। कहानी के विषय नया नइखे। परिवेशो परिचिते बटुए। कहन के शैलियो पुराने बा। भाई आ भाई के बीच के बेईमानी के शुरुआत सृष्टि में ओही घरी हो गइल होई जब केहू के भाई जनम लेके बड़ भइल होई, ओकर बियाह भइल होई आ फेर मरद-मेहरारू के नेह से संतान जनमल होइहें स ऽ। त... फेर एह कहानी के चरचा के मतलब का जब एह में कुछुओ नया नइखे ?

दरअसल कहानी वस्तु से ना प्रभान्वीति से नया होले। एमें रजेसर मास्टर के मेहरारू के जवन चरित्र बा ऊ चरचा के जोग बा। जथारथ के भूँऽइ पर उगल ई आदर्श चरित्र बा त छोट, बाकिर कहानी के धुरी बा-जेमें भारत के नारी-चरित्र के विकास के चटकार रंग खिलत बा।

(2)

आदर्श एही से ना कि ऊ अपना चरित्र से धीरज, संयम, त्याग भा नैतिकता के ऊँच मूल्यन के उदाहरण सोझा रखली-ऊ सब त रहबे कइल, बलुक एहू से कि ऊ परिवार में होखे वाला झगरा के ना होखे दिहली। अउरी केहू रहित त अबले गाँव कपारे उठा लेले रहित काहें कि ओकरा संगे कहिए से बेइंसाफी होत आइल बा।

परिवार के झगरा आ कलकान सृष्टि तक के नाश कर सकत बा-ई बात भारत खूब बढ़िया से जानत बा।

जब शरीर में कवनो लवण भा विटामिन के कमी हो जाला त ओकरा के बाहर से लेके ओकर भरपाई कइल जाला जेसे शरीर स्वस्थ आ निरोगी रहे। एही तरे जब मन में कवनों चीज के कमी हो जाला त ओकर भरपाई साहित्य, संगीत, कला वोगैरह के जरिए होला। ई सब मन के फुड सप्लिमेंट हवन।

साहित्य में यथार्थ जरूरी बा, बाकिर कबो-कबो ओकर बेसी समाज के रचना में ना, ओकरा बिखराव में योग देबे लागेला। तब एगो सचेत रचनाकार एगो छोटहन यथार्थ के लेके एगो वृहद आदर्श के सर्जना करेला। एकरा के बेहिचक दुर्लभ यथार्थ (rare realism) कह सकत बानीं जा। ''भंडारघर'' के मास्टर साहेब के घरनी के चरित्र एकरे परतोख बा।

मास्टर साहेब के चाचा लोग उनकर सरबस खा-पी के पचावते ना रहे, ऊ लोग उनकरा बाप के मुरुख बना के भरहींक खटावतो रहे। शिवधारी काका झुठहूँ अपना के परिवार के मालिक समुझत रहि गइलन। साँचो-फुरो, देयाद लोग उनके मालिक त का, कबो आपन सवाँग तक ना गदानल। ऊ लोग त उनकरा उदारता के फायदा उठावत उनकर अपार शोषण करे पर तुलल रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

शिवधारी काका काहें बेमार परले एकर बात बतावत बटेसर जल्दबाजिये में सब कहि गइल रहले- ''पछिला बुधवार के खेत में रोपनी होत रहे। काका जन-मजूर के पानी पिआवे गइले। उहवाँ देखनिहार के बिना सभ मजूर महटिआवत रहले। काका के जाँगर जोस से करके लागल। फेर जान जइहऽ जे ओकनी के संगे-संगे रोपनी में भिर गइलें। साँझि ले भींजते रह गइलें। ओहिजे कँपकँपी उखड़ गइल। कइसहूँ घरे अइलें आ भहरा के खाटी पर गिर गइलें। तेल मलाइल। काका के देह के गरमी टूट गइल रहे। काहे के सुने जाव। धीरे-धीरे हालत बिगड़े लागल। काल्हे से खटिए पर परल-परल पेसाब-पैखाना होता।''

बटेसर के एह कथन से जन-मजूरन के चरित्र के साथे-साथ शिवधारियो काका के चरित्र के पुरहर बोध हो रहल वा। भोजपुरिहा क्षेत्रन में 'महटिआवल' एगो अइसन आम बेमारी ह जेकर मजा, जरूरत परला पर, आम आ खास दूनों तबका उठावेला। खास कऽ के जवना काम में समय आ मजूरी के आनुपातिक सम्बन्ध होला ओहिजा ई सामान्य रूप से स्वभाविक होखल जनाला।

बाकिर, शिवधारी काका ई कइसे बरदास करिहें कि उनका काम के अकाज होखे- से जन-मजूरन में जोश भरत अपनहूँ काम में भिड़ जात बाड़े। जब काम में जोश आवेला तब उमिर उड़ जाले, समय रुक जाला, संकल्प आगे-आगे चले लागेला, भूख-पियास सब मिट जाला। तब मन आपन काम करेला, देह आपन आ प्रकृति आपन। प्रकृति के उल्टा चलला से रोग पकड़ लेला।

शिवथारी काका खरहो ना टकसइते तबो कवनो उलटन ना होइत। उनकर आपन बेटा बहरा कमात-खात बा, खेती-बारी, अनाज-पानी सबमें उनकर हिस्सा बा। ऊ कुछ नाहियो करिते तबो सुख-चैन के जिनगी जिहिते, बाकिर ना, ऊ ओह परंपरा के प्रतिनिधि बाड़े जे आपन सब कुछ अपना भाइयन प निछावर कर देला।

आज शिवधारियो काका अइसन चरित्र सुलभ नइखन।

जयकांत सिंह के कहानीकार के मकसद जीवन-जगत में जवन ढेर बा ओके देखवला के संगे-संगे ओहू के देखावल बा जवन कम बा भा लगभग हइए नइखे। जहाँ हित बा ओहिजा साहित्य बा आ हित खातिर साहित्य यथार्थ भा आदर्श के गुर्हते रहेला।

(3)

कहानी शिवधारी काका के खटपरू होखला से शुरू होत बिया। अचरज त ई बा कि टोला-परोसा के लोग भी उनका बेमारी के बारे में उनकरा भाइए-भतीजन पर विश्वास करत बा जे कहत गइल बा लोग कि ऊ ठीक हो रहल बाड़े, जबकि हाल ई बा कि उनकर अब-तब के घरी भइल बा। गाँव-देहात में सामान्य रूप से अइसे होखे ना! गाँव में केहू के तबीयत खराब होखला के सुन के ओकरा दुआर पर हुजूम जुट जाला। शायद शिवधारी काका के गाँव एगो अजगुत गाँव बा। कहानीकार के शब्दन में- ''केतना अचरज के बात बा जे आज ले टोलो के केहू हाल-समाचार पूछे ना आइल। सभे एह घर का लबरन पर विश्वास कइल। एकरा में जरूर कवनो राज बा।''

राज ई हो सकत बा कि शिवधारी काका के परिवार के लोग ई बूझत होखे कि ऊ कवनो धनसुत गाड़ के रखले होइहें।

www.bhojpurisahityangan.com

स्वारथी, लोभी, कुपदी आ राज्य से द्रोह करेवाला, हर तरह के प्रपंच के सहारे, ओकरे सत्यानाश करे के जोगाड़ में रहेला जे कवनों विधि ओकर हित कइले होखे। ऊ ऊहे अँगुरी उखार देबे के जतन करेला उजवन ओकरा के मधु चटवले रहेले। बाकिर, एहिजा शिवधारी काका एह से बाँच जा तारे कि उनकर बेटा रजेसर मास्टर हर तरह से लायक आ समरथ बाड़े, कवनो चीज-बतुस भा अर्थ के लेके दोसरा पर आश्रित नइखन। सोंचल जा सकत बा कि यदि मास्टर साहेब कमात-धमात ना रहिते त उनकरा बाबूजी के हाल का होइत! अब तक त ऊ मुइए नूँ गइल रहिते ?

एमे कवनो शक नइखे-शिवधारी काका मूँ गइल रहिते आ उनकर बेटा रजेसरो ना बँचिते जो ऊ अपढ़, अकसरुआ आ बेकार रहिते!

भोजपुरी साहित्य के पहिली कहानी 'मलिकार' के सेवक आ उनकरा बेटा लोग के हाल से एह बात के ठोस प्रमान दिहल जा सकत बा।

(4)

सेवक आ देवकी दू जाना एकलाद के भाई बाड़े बाकिर दूनों में अइसन फरक कि जइसन तुलसीदास जी भल आ खल लोगन के बारे में लिखत कहत बानीं- कमल आ जोंक नियर अंतर बा। सेवक नाँवे के अनुरूप सरल सुभाव, छलरहित बाड़े जबकि देवकी धूर्त-धुरंधर, मनसपापी आ बेइमान। सेवक दादा के लँगोटिया इयार धरमदेव उनका से बात-बतकही के दरमियान देवकी के जवन चरित्र उघारत बाड़े ऊ अइसे बा- "दादा, देवकी के बात मति कहऽ। ऊ भारी जमामार ठहरलन एह बाति के सभ जानत बा। जवार के कवन अइसन गाँव बा जे इनकरा चोंच के सिकार ना भइल होई? दुइ आदिमी में झगरा लगाइ के एगो के पछ-पयरवी कइल, मोकदमा लड़ाई के मेहनताना कमाइल इनिकर रोजिगार ठहरल। जिनिगी भर क जम्हुराज आजु महातमा थोरे हो जइहन?....."

सेवक दादा के चार लरिका में से दू जाना सुराज के संघर्ष के बेरा आपन जान देशसेवा में लुटा देत बा। दू जाना- रामाधार आ बंसरोपन- बँचले तऽ दूनों जाना देवकी के ताप से अपना के बँचावे में एकदम असमर्थ बा लोग। इहन लोग के एगो बहिनो बिया जे अबे कुँवारे बिया। सेवक दादा धरमदेव से आपन दुख रोवत कहत बाड़े -"धरमदेव भाई, दूसरा बाति क तकलीफ नइखे। लइकन क बउराही, जगह-जमीनि क झंझट आ देवकी बाबू के बेइमानी इयाद परला पर करेजा काँपि जात बा। माया क फाँस बड़ा बरियार ठहरल। अबे रधिकवा क बियाह बाकिये बा। जानते बाड़ऽ कि तिलक-दहेज के कवन हालि बा?..... जब पाँच बिगहा कबाला करीं तब न बेटी के बियाह होई? देवकी बाबू से कहलीं जे हमार आसन त दस-पाँच दिन में उठले बोलत बा, खेत के ममिला फरिआइ के लइकन क नाँव चढ़ाई देईं त आजु-कालिह कहि के टरले जात बाड़न।"

सेवक आहि-आहि करत मर जात बाड़न। उनकर लरिका लोग देवकी से आपन हर-हिस्सा माँगत बा। ऊ साफ नकार जात बाड़े। गाँव के पंचो लोग हारके हाथ खड़ा कर देत बा। कोर्ट-कचहरी कतहूँ से न्याय नइखे मिलत। हर तरह से खूँख होके सेवक के दूनों लरिका लोग टुटला मने, कुहुकत-सुसुकत गाँव छोड़ देत बा आ दोसरा के दुआरी मजदूरी करे लागत बा। एहिजो कुफुत नइखे छूटत। काम के

www.bhojpurisahityangan.com

खटानी आ सुबहित भोजन ना मिलला से बंसरोपन बेमार पर जात बाड़े। मालिक के का गरज- नोकर चाहे मरे चाहे जीये! दवा-बीरो आ पथ्य के अभाव में बंसरोपन के प्रान-पंछी देह के पिंजरा तूर के उड़ जात बा। एगो अइसन परिवार जेकरा पासे धन, इज्जत, नाँव सब रहे एगो पापिष्ठ भाई के वजह से अइसे बर्बाद हो गइल जइसे बरसात में पानी परला से पालकी के साग। परिवार के मये जिमवारी अब रामाधार के कान्हे आ जात बा। बिपति में बिपति ई कि उनकर बहिन रधिकवा के बिआह अबे बाकिये बा।

अवध बिहारी सुमन (जे संन्यास लिहला के बाद दंडीस्वामी विमलानंद सरस्वती के नाँव से प्रसिद्ध भइले) के कहानी 'मलिकार' विशुद्ध रूप से सामाजिक यथार्थ के कहानी ह, जेमे शोषक आ शोषित दूनों एके वर्ग, एके जाति-धर्म आ एके महतारी-बाप से पैदा भइल लोग बा। इहँवा तथाकथित टाइप के कुछुओ नइखे। सुमन जी के कहानियन के प्रगट करावे में यद्यपि मार्क्सवादी नागार्जुन के प्रेरणा बहुत महत्त्वपूर्ण बा, बाकिर सुखद बा कि ई प्रेरणा मौलिकता के साधक के रूप में आइल बा, साँच के घुमावक के रूप में ना।

'भंडारघर' में भी ठगे वाला आ ठगाये वाला दूनों समान जाति-धर्म, गोत्र आ खून के वंशज बा। एहिजो यथार्थे बा, बाकिर रेयर। यथार्थ आ आदर्श के बीच के बाँटे वाली रेखा दूनों के सिवान में पइसत-निकसत रहेले।

(5)

भाई-भाई के बीच के नीमन-बाउर सम्बन्धन के देखावे के लर में प्रेमचंद के हिंदी कहानी 'दो भाई' भी एगो महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बा। ई कहानी बतावत बिया कि बियाह होखला के बादे भाइयन के बीच जरन पनकेला। कलावती, उनकर दू जाना लरिका केदार आ माधव आ इहन लोग के मेहरारू चम्पा आ श्यामा के लेके लिखाइल ई कहानी सुख से शुरू होत बिया आ एगो गहिर उदासी में बिसवत बिया। प्रेमचंद लिखत बाड़े-

''कई वर्ष बीत गये। दोनो भाई जो किसी समय एक ही पालथी पर बैठते थे, एक ही थाली में खाते थे और एक ही छाती से दूध पीते थे, उन्हें अब एक घर में, एक गाँव में रहना कठिन हो गया। परंतु कुल की साख में बट्टा न लगे, इसलिए ईर्ष्या और द्वेष की धधकी हुई आग को राख के नीचे दबाने की व्यर्थ चेष्टा की जाती थी। उन लोगों में अब भ्रातृ-स्नेह न था। केवल भाई के नाम की लाज थी। माँ भी जीवित थी, पर दोनों बेटों का वैमनस्य देख कर आँसू बहाया करती। हृदय में प्रेम था, पर नेत्रों में अभिमान न था। कुसुम वहीं था, परंतु वह छटा न थी।''

कहानी के अंत मार्मिक त बड़ले बा, हृदय तक मथ देबे वाला व्यंग्यात्मको बा। करज चुकावे खातिर माधव के आपन हिस्सा वाला घर गिरवी रखे परत बा। ओह घरी सबके होश उड़ जात बा जब पता चलत बा कि महाजन-तहाजन के त बहाने भर रहुए। असल में बड़ भाई केदारे पइसा देत बाड़े आ उनके नाँवे रेहन लिखात बा। प्रेमचंद के लेखनी एह करूण प्रसंग के बड़ा सहज ढंग से चित्रित करत कहत बिया -

''प्रातःकाल था। केदार के द्वार पर गाँव के मुखिया और नंबरदार विराजमान थे। मुंशी दातादयाल अभिमान से चारपाई पर बैठे रेहत का मसविदा तैयार करने में लगे थे। बार-बार कलम बनाते और बार-बार खत रखते, पर खत की शान न

www.bhojpurisahityangan.com

सुधरती थी। केदार का मुखारविंद विकसित था और चम्पा (उसकी पत्नी) फूली नहीं समाती थी। माधव कुम्हलाया और म्लान था।

मुखिया ने कहा- भाई ऐसा हित, न भाई ऐसा शत्रु। केदार ने छोटे भाई की लाज रख ली।

नंबरदार ने अनुमोदन किया- भाई हो तो ऐसा हो।

मुख्तार ने कहा- भाई, सपूतों का यही काम है।

दातादयाल ने पूछा- रेहन लिखने वाले का नाम?

बड़े भाई बोले- माधव वल्द शिवदत्त।

''और लिखानेवाले का?'' -

''केदार वल्द शिवदत्त।''

माधव ने बड़े भाई की ओर चकित होकर देखा। आँखे डबडबा आईं। केदार उसकी ओर देख न सका। नंबरदार, मुखिया और मुख्तार भी विस्मित हुए। क्या केदार खुद ही रुपया दे रहा है? बातचीत तो किसी साहूकार की थी। जब घर ही में रुपया मौजूद है तो इस रेहननामे की आवश्यकता ही क्या थी? भाई-भाई में इतना अविश्वास! अरे, राम! राम! क्या माधव 80 रु० का भी महँगा है ? और यदि दबा ही बैठता, तो क्या रुपये पानी में चले जाते ?

सभी की आँखे सैन द्वारा परस्पर बातें करने लगीं, मानो आश्चर्य की अथाह नदी में नौकाएँ डगमगाने लगीं ।

श्यामा (माधव की पत्नी) दरवाजे की चौखट पर खड़ी थी। वह सदा केदार की प्रतिष्ठा करती थी, परंतु आज केवल लोकरीति ने उसे अपने जेठ को आड़े हाथों लेने से रोका। बूढ़ी अम्मा ने सुना तो सूखी नदी उमड़ आई। उसने एक बार आकाश की ओर देखा और माथा ठोंक लिया।''

एह कहानी में बड़ भाई केदार आ उनकर मेहरारू चम्पा के चाल आ चरित्र घतिगर बा। माधव आ उनकर मेहरारू श्यामा गिरहस्ती के भार से जँताइल बा लोग। इहन लोग का तीन-तीन गो बेटी के बियाह करे परल बा। साधारण आदमी के त एके गो बेटी के बियाह करे में हालत खराब हो जाला। तबो ई लोग अपना परंपरा आ संस्कार से कटल नइखे। केदार के एके गो लरिका बा आ उहो कवनो काम के ना। दूनों परानी देखजरू बाड़े। निवास भले ऊँच होखे, करतूत नीचो से नीच बा।

'दो भाई' कहानी कवनो शक नइखे ओह घरी लिखल गइल होई जब परिवार आ समाज में लोक लाज आ परंपरा के बान्ह एकदमे ना टूटल होई। 'मलिकार' कहानी ओह घरी लिखल गइल होई जब व्यक्तिगत आ सामूहिक संस्कार के धुरछक छूट गइल होई। बेशक जयकांत सिंह के कहानी ''भंडारघर'' ओह घरी लिखाइल होई जब लागत होई कि कुछ ना बाँचल त ऽ ओह कुछ ना बँचला में से कुछ अइसन खोज लिहल गइल होई जे सबकुछ खतम हो गइला के बादो बाँचल रहि जाला- एगो सोच, एगो दर्शन, एगो विचार कि कवनो ना कवनो- कोने-अँतरे में सही - आदमी के भीतर के आदमीपना मुए ना।

सुखद ई बा कि ई तीनों कहानी घर-परिवार आ समाज के देखी पर लिखाइल बाड़ी स कवनो ऊखी-बीखी से ना। एह से एहिजा विचार बा, विचारधारा के भौकाल ना।

ई तीनों कहानी समाज के विकास के संगे-साथ कहानियो के विकास के राह रेखांकित करत बाड़ी स। ●

www.bhojpurisahityangan.com

गीत

□ हरिहर राय चौहान

चान नभ में ना आइल, निशा के निहारे। २
दांतन के दमक देखि, दामिन लजाइल।
गोरी के चुनरी में..... तरई.... टकाइल।
कजरारी आंखिन में, छलकल समुन्दर ।
टिकुली के टहटह , सुरूजवो से सुन्दर।
दर्पन में देखि गोरी..... रूपवा निखारे।
चान नभ में ना आइल, निशा के निहारे। २

पायल के रूनझुन, आ खनखन कंगन के।
मधुर प्यार बतिया....आ रूपवा सजन के।
सांवर सनेहिया के..... दियरी जराई।
नेहिया निर्मोही के..... कबले सताई।
चारि डेग चले गोरी, अँचरा सम्हारे।
चान नभ में ना आइल, निशा के निहारे। २

साजल सनेहिया के.....दियना बुताइल।
अउरी झरोखा पर, भोर निगिचाइल।
निनिआइल आंखिन के पपनी बा भारी।
मनवा के पीर केहूँ....कब तक ले मारी।
रोज-रोज असहीं ऊ, रतिया गुजारे।
चान नभ में ना आइल, निशा के निहारे। २

केतने बरिस भइल, चिट्ठी ना पाती।
ना कवनो हीत-मित, संगी संघाती।
बात भइल दुलम बा, गतर-गतर पीरा।
दुसमन अस लागे ई, फगुआ-जोगिरा।
भीतर हुक गोरी, भीतरे में मारे।
चान नभ में ना आइल, निशा के निहारे। २

खड़ंगाझार, टेल्को,
जमशेदपुर–4

●

हमार चिरैया

□ छाया प्रसाद

हरे-हरे बांस से, मड़वां
छावाये बाबा।
हृदया में उठता हिलोर
बहे लागल अखियां से लोर।

एही रे मड़उआं में,
धिया दान करिहे,
सोच, बाबा रोये लगले मोर।
बहे लागल अखियां से लोर।

हमरी चिरैया,
फुदके, अंगनवां में,
चली जइहें, सबका के छोड़,
बहे लागल अखियां से लोर।

छतियां लगइले धिया,
बाबा अम्मा रोये लगली
फाटे ला करेजवां के पोर,
बहे लागल अखियां से लोर।

दूधियां पिलाई अम्मा,
बाबा के रे गोदियां,
कइसे होईहे, धिया से बिछोह,
बहे लागल अखियां से लोर।

छोटका बिरन मोरा,
पकड़े ला डोलियां,
काहे बहिनी जाय, सबका छोड़
बहे लागल अखियां से लोर।

छोड़-छोड़ नेह भइया,
हमरी रे डोलियां,
हम हई परदेशी लोग।
बहे लागल अखियां से लोर।

मो० : 7488093377

●

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

एगो रहलन कवि जी

□ डॉ० रजनी रंजन

एगो गाँव रहे जेकर नाम रहे- अमवा घाट। शांत-सुकून से भरल, खेत-खरिहान, नदी-नाला, आ चिरई-चुरूंग के बोल से रजगज। ओही गाँव में रहलन- लोग त "कवि जी" उनका के कहत रहे बाकिर उनकर असली नाम रामेश्वर प्रसाद मिश्र रहे। उनकर कविताई अइसन रहे कि लोग उनकर असली नाम बिसार दिहले।

कवि जी कइसे कवि बनलन, ई कहानी बड़ा मजेदार बा।

कवि जी रोज बिहाने नदी किनारे टहले जासु। ओहि किनारे एगो पुरान पीपर के नीचे बइठ जात रहलन । उनका पासे ना कागज रहत रहे, ना कलम- बाकिर दिमाग में कविता उमड़ के आइए जात रहे। ओह घरी कवि जी खूब मगन होके कविता वाचन करसु। बाकिर सुनवइया केहु ना रहे। कबो-कबो लोग आवत जात उनका के बोलत सुने त कहे- पागल हउव का ? अकेलहीं बुदबुदा ताड़े। ऊ हँस के कहसु- नवका कविता फुटल बा आईं बइठीं त सुना देब। बाकिर भोरे भोर काम पर भागे वाला मनई के कविता सुने के कहाँ फुरसत।

एक दिन गाँव के स्कूल में "कविता प्रतियोगिता" राखल गइल। मास्टर साहेब कवि जी के नेवता पेठवलन-

"कवि जी! आके एह में आपन कविता सुनाईं।"

कवि जी त आ गइलन। एगो आदमी कहलस- इनका लगे ना कॉपी बा ना डायरी, का सुनइहें! कवि जी के कान तक ई बात पहुंच गइल। ऊ सकुचात बोललें- "हमरा से कविता त कागज पर ना लिखाला बलुक दिमाग में बस आपे उतर जाला।"

स्कूल के लड़िका-लइकी सब त बड़ा उत्साहित रहलेस। मंच त सजल रहल बस जइसहीं गाँव के लोगन के जुटान भइल त कवि जी मंच पर चढलन।

सबके मन में उत्सुकता रहे - कवि जी का सुनइहें ?

कवि जी आँख मूँदलन, माथ पर हाथ फेरलन, आ गला खँखरलन। फेरू अचानक गावे लगलन-

"आकाश में उड़े एक चिरई,
साँझ भइल त लवटल मड़ई,
जेकरे दिल में प्रेम न बसल,
ओकरे खेत ना उगे फसल।"

सब लोग खूबे ताली बजावल। मास्टर साहेब पूछलें-

"कवि जी! ई कविता कहाँ से सूझेला?"

कवि जी मुस्कुरा के बोललन-

"भइया, कविता हम ना बनावेनी... ऊ त आपन रास्ता खोज के हमरा दिमाग में खुदहीं आ जाले।" कवि जी गदगद हो गइले। आखिर आज उनकरा कविता के शाबासी मिलिए गइल। अबकी कवि जी के नाम गाँव से बहरी भी गइल।

एक दिन शहर से एगो बड़का लेखक गाँव के कार्यक्रम में कवि जी के कविताई के तारीफ सुन के अइलन। उ कवि जी के खोजत-खोजत पीपर गाछ के नीचे पहुँच

www.bhojpurisahityangan.com

गइलें। देखलें- कवि जी चुपचाप नदी देख के हँसत जात बाड़न।

ई देखके लेखक पूछलें-

''का कवि जी, कविता खाली हँसले से बन जाला का ?''

कवि जी जवाब देलन-

''नदी जइसे आपन धार बहावत रहेला;
ओसहीं हमार मन कविता बहावत रहेला।
हम त बस महसूस कर रंहल बानी,
ओकरे आनंद से मुख मुस्करा रहल बानी।''

जबाब सुन के लेखक प्रभावित हो के कहलें- ''राउर कविता छपी तबे नु सभका तक पहुंची आ राउर नाम होई।''

कवि जी हँसत बोललन-

''हमार कविता कागज पर कैदी बन के ना रह पाई। ई त-

हवा में उड़ेले,
नदी में बहेले,
गाँव में रहेले,
मनई के कहेले,
आ गाँवे के बोली-बानी में मिल जाले।''

लेखक खूब प्रभावित भइले बाकिर कवि जी कविता कागद पर उतरवावे खातिर तइयार ना भइले। हार पछता के लेखक लवटि गइले।

धीरे-धीरे कवि जी के नाम दूर-दूर तक फइल गइल। अब लोग उनका के कहे लागल- ''मुखी कवि जी, जिनकर कविता कागज पर ना, दिल में छपेला।''

एक दिन फेर लेखक मुखी कवि जी से मिले खातिर गाँव अइलन। ऊ बड़ी मिन्नत कइलन कि कवि जी अपना साथे कुछ दिन उनका के राखस आ अपना नियन कविता लिखे के सिखावस काहे कि उ छंद में लिखे ना जानत रहलन बाकिर छंद उनका खूबे पसंद आवे। मुखी कवि मान मनउवल के बाद उनका संगे रखे के तेयार हो गइले। धीरे धीरे दुनु जन आपन कविता के बखान एक दुसरा से करे लगले। तनिके समय में दोस्ती नजदीकी में बदल गइल रहे। एक दिन लेखक कहले कि हमार मेहरारू पहिले कविता छंद में सुनावत रहली ऊ ढेरे लिखले बाड़ी। जब खुश रहेली त गावत कई बेर सुनले बानी। बड़ा नीक लागेला। बाकिर बाद में कहे लगली कि अब हमार मन इ कविताई से उचट गइल बा एहसे अब ना गावेली ना लिखेली। एगो कविता उहे लिखले बाड़ी बाकिर ओकरा के अधूरा छोड़ दिहले बाड़ी। हमरा ऊ बहुते पसंद बा। कई बार ओकरा के हम पुरावे के कोशिश कइनी बाकिर अंतरा पहिलका नियन जमल ना। हम त गद्य लिखे के ज्यादा पसंद करीले। पद पर हमार पकड़ कमजोर बा। एही से जब रउआ लगे आइल बानी त सोचतानी रउआ एकरा के जरूर पूरा देब। रउआ के सुनाईं का! मुखी कहलन-सुनाई! देखीं तनी। पूरे लायक होई त पूरा देब। लेखक जइसे कविता शुरू कइले मुखी के मुँह खुलले रह गइल। कविता खतम भइला पर लेखक कहले अगिला बंद बनाई त। मुखी के त काठ मार गइल। धीरे से कहलें- रउरा यकीन बा, ई उहे लिखले बाड़ी। कबो उनका के लिखत देखले बानी।

तनी सकुचात-मुस्कात कहलन- लिखत त देखले नइखीं कबो। बाकिर गावत पढ़त सुनलें बानी। मुखी कहलन-रूकीं! फेर पाकिट से एगो फटहीं आ मुचराइल छोटहन डायरी निकाल के एगो पेज खोल के लेखक के आगे कर देहलन। लीहीं

www.bhojpurisahityangan.com

देखीं त इहे बंद रहल ह नु। लेखक भौंचक्का! रउरा लगे कइसे? कवि जी कहलन- इहो हमरे लिखल ह। ऊ गइली त साथे ले गइली। ओही घरी से प्रेमगीत हम कबो लिखबे ना कइनी। पहिले हम बड़ी मिजाज वाला रहनी। स्कूल में उनका से भेंट भइल त कविता हमरा हृदय में जनमल। हम खूब लिखीं आ जब उ हमरा आसपास होखस त उनके बहाने से हम आपन कविता सुनाई। ऊ सुन के खूब हमर तारीफ करस। हम एकरा के धीरे धीरे आपन जिनिगी बुझे लगनी। कबो-कबो ऊ हमार गीत के नया राग बना के हमरा के सुनावत रहली। बाकिर उनकर आपन दुनिया रहे जवना में ऊ मगन रहत रहली। एक दिन हम उनका के आपन डायरी में लिखल सब गीत दे दिहनी ई कहके कि तुम बहुत अच्छा गाती हो।

फेर त दोस्ती बढ़े लागल। एक दिन एही नदी किनारे पिकनिक पर सब दोस्त इकट्ठा भइनी त उ हमार डायरी हमके वापस कर देहली। कहली कि जे हमरा ठीक लागल ह उ हम अपना डायरी में उतार लेले बानी। आगे के पढ़ाई ससुराल से होई एह से तहार डायरी तहरा के वापस कर देत बानी।

हमरा त काठ मार गइल। अब जवन रोग अकेलहीं पैदा कइले रहीं ओकर दवाई भी खुदे खोजे के पड़ल। प्रेमगीत तब से आज ले ना लिखाइल। बाकिर इ नदी के किनार आ इ पीपर गाछ हमर जिनगी बन गइल। कविता के रुप बदल गइल। अब प्रकृति हमार विषय बा। बाकिर ओहिमे राग प्रेम से भर जाला। लंबा साँस लेके मुखी जी कहले- उनका नइखे पता आ कहब मत। कहते कहते मुखी जी लुढक गइले आ उनकर जीवन समाप्त हो गइल।

लेखक बुझ गइले कि वियोग से उपजल गीत के राग काहे एतना मधुर होला। जे कुछ अचानक भइल उ तऽ गाँव में आग जइसन फइल गइल। गाँव भर के लोग मिलके उनकर अंतिम संस्कार कइलन। सब खतम भइला पर लेखक अपना घर के तरफ रूख कइलन। लेखक के मन अपराध बोध से भर गइल रहे। समय बीतल पर अब लेखक के मन राग से भर गइल रहे। ऊ जहाँ जास ओह गीत के सुनावस बाकिर मुखी कवि के नाम से सुनावस। कहस कि अमवा घाट के पीपर अबहियो उनकर कहानी कहेला-

उनका सरल जीवन, उनका सहज हँसी, आ उनका कविता के अजब दुनिया कवि जी के सोच असाधारण, -कवि जी बस एही से खास बन गइलें।

अब लोग कहे-

''एगो रहलन-- मुखी कवि जी! जे कागज पर भले कुछ ना लिखलें, पर लोगन के मन में बहुत कुछ छोड़ गइलें।''

आजुवो गाँव में जब पीपर के नीचे हवा चलेला त लोग कहेला- ''इहे जगह पर एगो रहलन कवि जी... जे चुपचाप दुनिया समझत रहलन।'' पीपर, पतई, नदी, गाँव आ धरती सबमें कवि जी हमेशा रहिहें।

घाटशिला, झारखंड

www.bhojpurisahityangan.com

रे आतंकी चीन!

□ अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष'

रे आतंकी चीन! विश्व के नींन चोरावेवाला!
मित्र पड़ोसी देशन के नित मेंड़ दबावेवाला!
रे लुच्चा, लंपट, लबार! हर जीव-जंतु के भक्षक!
बनिके मित्र, मित्र खातिर छल-जाल बिछावेवाला!

आस्तीन के साँप हवे तें, तब्बो दूध पियवलीं,
सहिके हर नीचता, कपारे पर तोंके बइठवलीं।
ई हमार कमजोरी ना, ह शक्ति, संग तोरे हम-
छमा-अहिंसा के निज परिपाटी,निज धर्म निभवलीं।।

छमा-अहिंसा के हमरे तें कायरता जनि बुझिहे
हमरे सहनशीलता के तें बुझिहे जनि कमजोरी।
कर देलीं सौ जुर्म छमा हम शिशुपालो के हँसिके
तीन दिनन ले कर लेलीं सागर से बिनय-चिरौरी।।

तबो न समुझे दुष्ट, त ओकरे भाषे में समुझादीं,
लातन से लतिया के लतखोरन के भूत छुड़ादीं।
खाईं मार, न बोलीं कुछ, हम अस न अहिंसावादी,
हम त मारि-मारि दुष्टन के दूनों गाल फुलादीं।।

जड़-चेतन, पसु-पंछी-नर भा होखे कवनो प्रानी
निर्बल भा बलगर भा राजा-रंक, मूर्ख भा ग्यानी।
माँ धरती के दूध पिये के सबके हक सम बाटे
सबके खातिर बहे हवा, नदिया-झरना के पानी।।

सबके बा अधिकार बिना भय-शंका मुक्त जिये के
सबके मुक्त अँजोर मिले,सुख-भाग बराबर सबके।
करें तरक्की, फरें-फुलाँ सब, बंचित रहे न केहू
ईश्वर से बा मिलल प्रेम, बरदान बराबर सबके।।

पर, तें भू, नभ, जल के निज जागीर, बपौती माने
चाहेले तें हड़पल-हथियावल ताकत से दुनिया।
अब न तोर विस्तारवाद के नीति चली धरती पर
ना हउवे दुनिया ई तोरे पिंजरा के ललमुनिया।।

www.bhojpurisahityangan.com

आजु परल बा नया हिंद से पाला तोर, सुधर जो
ना त तोर धरा के नक्शे से निशान मिट जाई।
ओढ़ि बाघ के खाल लड़ी का रे सियार नाहर से
बेना के बतास आन्हीं के आगे का टिक पाई! ।।

इहाँ के लइका पकड़ि सिंह से खेले, दाँत गिनेला
अउर सिंह के ऊपर चढ़िके लइकी करे सवारी।
भले घास के रोटी खा, पर झुके इहाँ ना केहू
करिके हड्डी दान करे सबके हित के रखवारी।।

बा इतिहास गवाह, दबवलीं मेंड न हम केहू के
कबो दूसरे देसन पर हम हमला कहीं न कइलीं।
सबके हित, सबके विकास, ह मंत्र हमार सदा से
पर, अनेति अधरम असत्य से समझौता ना कइलीं।।

जे हमरे धरती माई के बुरा नजर से ताके
ओकर आँखि निकाल ओकरिए हाथे में धर देलीं।
जे हमरे आजादी के सिन्दूर चुरावल चाहे
ओकर हाथ काटि ओके हम बिना हाथ कर देलीं।।

हमरे सहनशीलता के तें ले मत अधिक परीक्षा
जो, चलि जो वापस तें! एही में बा तोर भलाई।
जुद्ध बदे, बेवजह बुद्ध के हमरे, जो ललकरले
बंसी चक्रसुदर्शन बनिके सर्वनास करि जाई।।

छा जाई बनिके बिनास तोरे 'अशोकउपवन' पर
तोरे 'अक्षय सपना' के पल-भर में क्षय कर जाई।
तोरे अंतिम क्रिया-कर्म हित बची न केहू कुल में
तोर सजे सोने के लंका माटी में मिल जाई।।

मो० : 9931110674

●

भोजपुरी के नाश तबे होई जब गाँव के मेहरारू अपना लइकन से भोजपुरी में बतियावल बंद कर दीहें।

- डॉ० विवेकी राय

www.bhojpurisahityangan.com

गीत

बसंत ऋतु

□ डॉ० निवेदिता श्रीवास्तव 'गार्गी'

आइल बसंत, मनवा हरसाइल हो
सरसो के पीयर चुनरिया में
धरती मुसकाइल हो।
कोइलिया कुहुके डारी-डारी,
पिया के याद आइल हो।

पुरवा बयार चले सन-सन,
लागे तन में मीठी अगन।
टेसू के फूल भइल बा लाल,
अमवां में आइल बा मोजर।
बाग-बगीचा महके सगरी,
भँवरवा गुनगुनाइल हो ।
आइल बसंत, मनवा हरसाइल हो।

पिया गइलें परदेस कमइले,
हमनी के जियरा भइल बेचैन।
देखि ई मौसम, धड़केला छाती,
नयनवा से बरसेला पानी।
कहवाँ बाड़े हो हमरा सजना,
जिनगी अकुलाइल हो।
आइल बसंत, मनवा हरसाइल हो।

अब तऽ होली भी नियराइल,
रंगवा बिना कइसन होली ?
अँचरा धई के गोहराईले,
सुना ए बालम, बतिया मोरी।
जल्दी अइब तऽ होइब खुश,
ई अँखियाँ जुड़ाइल हो।
आइल बसंत, मनवा हरसाइल हो।

●

गीत

जहर बाटे कतना

□ माधवी उपाध्याय

मनई के मन अब लागत नइखे
जिनगी के रस अब भावत नइखे।।

भइल समाज के पतन अब अतना
बढ़ल मनभेद बा जहर बाटे कतना
कइसे संवारी, जिनगिया सुधारी,
चुभल जे कांटा निकालत नइखे।।

होखेला हर पल, व्यवहार नकली
झूठ फरेब के जहर लागे असली।।
दूसर त दूसर ना अपनों सनेही,
संवेदना मन के गावत नइखे।।

कइसे संवारी, सनेहिया संजोई
संस्कारन से भटकल बा मनई।।
सम्मान आदर के बतिया न जानें
जरत अगिनिया बुताई त कइसे।।

नफरत के बीया बोआता जिया में,
कइसे बिताई कठिन रतिया में।।
देश धरम से बा जिनगी के सपना
देश से बढ़ी के संघतिया त नइखे।।

जाति धरम में उलझ गइल दुनिया
युद्ध अशांति के जहर भइल दुनिया।
सम्भल जा तु अबहुं मनवा मना ल,
ना त पुछाई मऊतिया त नइखे।।

●

भोजपुरी में इश्क करे के अंदाजे कुछ और बा।
- मोती बी. ए.

अश्लीलता भोजपुरी के पहिचान ना ह, ई भोजपुरी के कलंक ह।
- डॉ० अशोक द्विवेदी

www.bhojpurisahityangan.com

सूना-सूना हवेली बा

□ विनोद सिंह 'गहरवार'

छोड़-छाड़ के गांव-नगर ,
केहु बम्बे केहु बरेली बा।
लटक गइल घर-घर में ताला,
सूना-सूना हवेली बा।।

दुमंहा दुअरा ओटा ओसारा,
दर दलान आ गेरुआरी।
सोरही गइया मैना बैला,
पीपर भूतहवा केल्हुआरी।।
कहाँ बा चुरा कहाँ चबेनी
कहाँ गुड के भेली बा,
लटक गइल घर-घर.....

भतुआ कोंहड़ा कदुआ नेनुआ,
सेम तरोई सतपुतिया।
कवनो लदरल बा फर के
त कवनो देले बा भतिया।।
अलना प लटकत अब नइखे,
बउकत कतो करेली बा।
लटक गइल घर- घर...

बांस घांस झलास रेंगनी,
बइर बबुर सगरो पसरल।
बिना बोअलें काँट मकोइया,
टेहुना भ सगरो उपजलह।।
गेंदा ओड़हुल केवड़ा कनइल,
कहवां चम्पा चमेली बा।।
लटक गइल घर- घर .....

तीज जिउतिया बहुरा गोधन
भाई दूज राखी बंधन।
चउठ एकादशी कार्तिक नहान छठ,
खिचड़ी आ चउक चंदन।।
भेदभाव सब भुला-उला दे
होत कहाँ अब होली बा
लटक गइल घर-घर.....

कटत रहे गरमी के छुट्टी,
बड़ा सवख से ममहर में।
कबो फुआ के गाँव बीते त,
कबो आजी के नइहर में।।
मध चुअत मिसिरी में घोरल,
कहाँ मामी के बोली बा।
लटक गइल घर- घर....

पढ़त रहे लोग रोज रामायण,
डूबते किरण दलान प।
रहत रहे दोहा चउपाई
उचरत असहीं जबान प।।
भोरे-भोरे हर कीर्तन गावत,
परभात फेरी के कंहवा टोली बा।।
लटक गइल घर-घर में ताला...
छोड़ छाड़ के गाँव नगर....

उदवंतनगर, भोजपुर (आरा)
फोन नं० : 8578985818

भोजपुरी के माटी में अइसन मिठास बा कि परदेशी के आँखियो में पनिया भर जाला।

- महेन्द्र मिश्र

भोजपुरी के भविष्य उज्जवल बा, काहेंकि ई मेहनतकश जनता के भाषा ह।

- महापंडित राहुल सांकृत्यायन

www.bhojpurisahityangan.com

कन्यादान

□ डॉ० वीणा पाण्डेय 'भारती'

दिनभर के काम धाम से थकल हारल औरत जब बिस्तर पर जाली तब अपना पति के आँखिन में ढेर सारा प्यार देख के उनकर सगरी थकान दूर हो जाला। बाकिर निर्मला के संगे अइसन कुछु ना रहे। नशा में धूत उनकर पति अमर हरदम मारत- पीटत रहेले। भारतीय संस्कार में बँधल अनपढ़, बेबस आ लाचार निर्मला तन आ मन दूनू के शोषण भइला के बादो कर्तव्यन के चक्की में पिसात बेचारगी के जीवन जियत रहली। शिक्षा के बिना आदमी कतना पराश्रित हो जाला, ई उनका के देख के सहजे अनुभव कइल जा सकत रहे। ई एगो अइसन स्थिति होला जवना में गलतो बात के गलत कहेके अधिकार ना होला।

निर्मला के बिआह संयुक्त परिवार में बड़ी धुमधाम से भइल रहे। सास ससुर, देवर देवरानी , इनकर बच्चा ननद अवरु ननद के बच्चा। निर्मला के दू बेटा एक बेटी। बड़का बेटा के नाम कमल, छोटका के पंकज आ बेटी नुपूर एह सभका साथे निर्मला नरकीय जिनगी बीता रहल बाड़ी।

अच्छा भला नौकरी छोड़ के नशा में धूत अमर घर के शांति भंग करेमें कवनो कोर कसर ना छोड़ेले। एक एक क के गहना, घर के सामान टीबी, फ्रीज सब ले जाके बेच दिहले। आ ना देला पर घर में मार पीट। दहशत के माहौल.. पूरा परिवार डरे सहमल। ना होली, ना दिवाली ना कवनो तीज-त्यौहार। हरदम एगो भय के वातावरण बनल रहेला। ना जाने कब तुफान के तरह आ के सगरो चीज तहस नहस करिके चल जइहें एकर कवनो ठीक ठेकाना ना रहे।

बड़ लोग त परिस्थिति से समझौता कर लेत रहे बाकिर बाल-बच्चन पर एह बात के असर देखाई देबे लागल। फुल खिले के पहिले हीं मुरझाए लागल। पानी सर से ऊपर बहे लागल अब त कमल पिअला के सुर में आपन पुस्तैनी मकानों बेच दिहले तब सभे के एगो किराया के मकान में सरन लेबे के पड़ल। तब निर्मला के देवर, समर के कठिन निर्णय लेबे के पड़ल। सेवानिवृत्त भइल बाबूजी, माई के साथे साथे भौजी आ भतिजा, भतीजी के जिम्मेदारी लेत भाई के घर से निकाल दिहले। आ कहले "शरीर के एगो अंग जदि खराब हो जाव त ओकरा के काट के निकाल देला में कवनो बुराई नइखे।" मर्माहत त सभे भइल लेकिन ई निर्णय सभे के मंजुर रहे।

अमर के सब बंधन से मुक्ति मिल गइल। उ अपना जिम्मेदारी से पीछा छोड़ा के कायर बनके भाग गइले। आपन कर्तव्य से विमुख, सभ बंधन के तुड़ के.....

निर्मला काठ अस खाढ़ सभ कुछ देखत रह गइली। आँखिन के लोर सुख गइल जइसे एह दुख के घरी में उहो साथे रहे में घबड़ात रहें। समय अनुकूल रहेला त सभे साथ देला।

कुछ समय के बाद निर्मला के धेयान बच्चवन पर गइल जवन कब से महतारी के लगे खड़ा रहलस। निर्मला कुछ समय खातिर सब कुछ भुला गइली, जइसे कुछ भइले ना होखे। आपन दरद के अपना भीतर छीपा के बच्चवन के छाती से लगा लिहली आ सभे के सोझा अपना होठ पर मुस्कान ले आवे में कामयाब हो गइली। पता ना मन भीतर कुछ टूटत अस लागल निर्मला के, आखिर अमर उनकर अग्नि फेरा लिहल पति रहलें पत्नी धर्म के आवेग एक बेर झकझोरलस जवना के झटक के उ बच्चन के छाती से लगा लिहली। भूत त करिखा अस करिया रहले रहल बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

बच्चन के भविष्य ?

निर्मला के जिनगी परिवार के देख रेख में आ बच्चन के परिवरिश में बीते लागल। निर्मला के देवर समर अपना दायित्व के प्रति सजग त रहले रहन उनकर मेहरारूओ पूरा साथ देत रहली। निर्मला के बच्चा सभ समर के पापा अवरू चाची शशि के छोटकी माई कहके बोलावत रहे लोग। ई वो लोग के निश्छल वात्सल्य आ नेह के उपज रहे।

समय पांखि निकाल के उड़त जात रहे। देखते देखत बाल बच्चा बड़हन हो गइलन सन। निर्मला के बड़का बेटवा नौकरी करे लागल आ छोटका बेटा प्रतियोगिता परीक्षा के तइयारी। बेटी नुपुर भी सेयान हो गइल। बड़-बड़ आँख, तीखा नाक नकसा, हँसे त गाल पर डिंपल आ ओहिमें यौवन के उन्माद चेहरा से झलके लागल, बहुते चंचल आ मिलनसार स्वभाव के मालकिन ओकरा केहू अपरिचित ना लागे, पूरा संसार ओकरा आपने लागत रहे।

नुपुर के पढ़ाई लिखाई में एकदमे मन ना लागत रहे। जइसे तइसे इंटर पास करिके घर के काम में हाथ बटावत रहली। अब बात शादी के रहे त। बहुते अच्छा एगो परिवार भी मिल गइल। सब कुछ बता दिहल गइल। लइका वाला सभ कुछ जानला के बाद शादी खातिर तइयार हो गइल। सूरूज के जोत अस लड़की केकरा ना पसंद होई। अब शादी के दिन रखा गइल। दूनू परिवार शादी के तइयारी में जुट गइलें।

अब बड़हन प्रश्न कन्यादान के दी। हर माई बाबूजी के सपना होला कि बेटी के दुल्हन बना डोली में बइठा के विदा करी। ई बहुते सौभाग्य के बात होला। शास्त्र में भी कहल बा - "कन्यादान से बड़हन कवनो दान ना होखे।"

नुपूर के कन्यादान के करी ? ई विषय पर सामुहिक चरचा चले लागल। केहू इआ - बाबा के कहे त केहुं चाचा-चाची के, केहू केहू त मौसा-मौसी के भी कहल वोगैरह वोगैरह...

नुपूर के माई अपना अतंस के दरद समेटले सभे के बात सुनत रहली बाकिर कुछ बोले के साहस ना कर पवली। उ जानत रहली कि औरत के साहस, मान, अभिमान ओकर मरद होला एही से उ मुक दर्शक बनके सभकर बात सुनत रहली। तबे नुपूर के आवाज सुन सभे चौक गइल। पत्नी जेकरा ना रहेला उ पति लोटा रखके कन्यादान दे सकेला त पत्नी अइसन काहें ना कर सकेली? कन्यादान हमार माइये दीहें। उहे हमरा खातिर सबकुछ बाड़ी। माई बाबूजी सब कुछ.... माई हमरा जिनगी के अस्तित्व बाड़ी नुपूर के आवाज में आक्रोश भरल रहे। अइसन बुझात रहे जइसे बरिसन के दबल ज्वालामुखी फाट गइल होखे आ ओह में से आँसून के लावा ....।

परिवार में सभे नुपूर के बात पर सहमत हो गइल। माई के चेहरा खिल उठल। अइसन लागल उनकर बरिसन के तपस्या पूरा हो गइल होखे।

एगो शानदार शादी। जेकरा के देख के सभे खुश रहे। सगरो शादी के विधि विधान निभावत कब विदाई के घरी आ गइल ई पता ना चलल।

गाना बाजत रहे- बाबुल की दुआएँ लेती जा, जा तुझको सुखी संसार मिले..

माई अपना कलेजा के टुकड़ा के विदा कइली। साथे सभ परिजन शामिल रहे बाकिर दू गो आँख दूर से निरेखत रहे अपना करेजा के टुकड़ा के..... बेबस. ... लाचार।

उपाध्यक्ष,
साहित्य समिति, तुलसी भवन। Z

www.bhojpurisahityangan.com

ए कक्का

□ मनीष सिंह 'वंदन'

काम उनकर बस....एतना बा
खाली झूठ-सांच....फेंकना बा
बड़का नेता....ऊ कहावेला
जे....जनता से दूर जेतना बा।।

जनसेवा....इ का होला भाई
इनका त खाली कुर्सी सुहाई
याद रखिहा....ए बचवा लोग
नेताजी त हउअन कसाई।।

मजा ले चूसें....जनता क रक्त
बन हितैषी रखेले तेवर सख्त
बाहर उज्जर-उज्जर कपड़ा
भीतर से....सब करिया तख्त।।

जब-जब चुनाव क बेरा आई
साधु बनिके इ दिहें दुहाई
मगर झांसा में मत अइह बाबू
मुँह में राम राम बाजू में दंगाई।।

अब त जागल जरूरी बा भाई
हक के खातिर होखे द लड़ाई
भोट के चोट बूझ ए कक्का
तबे मिली ई दुख से विदाई।।

आई टाइप, आदित्यपुर,
जमशेदपुर ●

भोजपुरी ऊ धाय हऽ

□ वसंत जमशेदपुरी

संस्कृत भाषा आजी बाड़ी
राजस्थानी माय हऽ।
स्नेहामृत से पोषल पालल,
भोजपुरी ऊ धाय हऽ।

देश-विदेश में बोलल जाले,
मिसरी अइसन बानी हऽ।
भोजपुरी के आखर-आखर
जइसे सोना-चानी हऽ।
मन के पुष्ट बनावे खातिर
समुझी कजरी गाय हऽ।

संजीवनी लछुमन के खातिर
अर्जुन खातिर गीता हऽ।
राधा रानी कान्हा खातिर
रघुनंदन के सीता हऽ।
भिनसारे अलसाइल मन ला
टाटा जइसन चाय हऽ।

माई भाषा, माटी, माई
के जइसे आशीष हऽ।
जे पूजल ओकरा खातिर
पुहूप राज शिरीष हऽ।

खरच करे पर दूना होखे
अजब-गजब ई आय हऽ।
स्नेहामृत से पोषल पालल,
भोजपुरी ऊ धाय हऽ।

मानगो, जमशेदपुर ●

भोजपुरी जिनिगी के भाषा ह, एह में रोवे-हँसे के ताकत बा।

- भिखारी ठाकुर

जवन समाज आपन बोली पर सरमाई, उ कबो आपन जड़ पर गरब ना कर पाई।

- पं० रामनाथ पाण्डेय

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा

वीणा के तार पर 'सउँसे चान अकासे'

□ हरिहर राय 'चौहान'

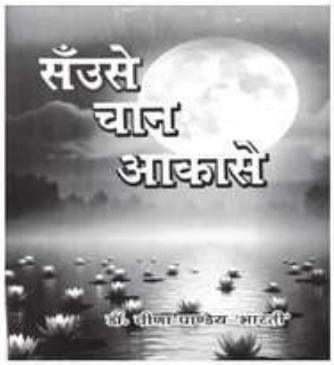

किताब के नांव :
सउँसे चान अकासे

कवयित्री :
डॉ० वीणा पाण्डेय 'भारती'

प्रकाशक :
जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद।

कविता कलात्मक छंदबद्ध वाक्यन के ऊ रचना ह, जवन कवि भा कवयित्री के कल्पना आ भावना के रमणीय आ रसात्मक बनावेला। जब कवनो कवि भा कवयित्री के अंतस में भाव उपजेला त मन तुलसी कबीर भा कालीदास हो जाला। एही अंतस के कलात्मक भावन के नतीजा बा कवयित्री वीणा पाण्डेय 'भारती' के कविता 'सँउसे चान अकासे'।

एक दिन हर काव्य कृति अपना सजल सवरल लोककल्याणकारी रूप में लोक के अर्पित हो जाले। बाकिर का एह लोक अर्पण के लक्ष्य लोककल्याण के अलावे जवन होला, ओह के बारे में प्रो० बच्चू पाण्डेय जी कहत बानी :-

कलम चला के उटकेरल जे,
जीनगी के हलकानी।
फरज बनेला कि हमनी सब,
उनका के पहिचानी।।

बस इहे 'पहिचानी' रतजगा करावेला। आ एही रतजगा कइला के प्रतिफल होला कवनो सृजन।

कवयित्री वीणा पाण्डेय 'भारती' एगो शिष्ट काव्य परंपरा के कवयित्री बाड़ी। जेकर कविता, गजल, मुक्तक आ गीत लोकगीतन के परंपरा के आगे बढ़ावे के काम कर रहल बा। आई पहिले संग्रह के समर्पण हीं देखल जाउः-

ई कविता दोहा गीत गजल,
ह उनके करम कमाई के।
बा आज समर्पित पुस्तक ई,
चरनन में शारदा माई के।

कवयित्री के माई के नांव शारदा ह, जेकरा के ई कविता संग्रह समर्पित बा। अब इनके तीनू प्रकाशित किताबन के नांव सपनों के पंख, स्वयं प्रभा के आंगन से आ सँउसे चान अकासे, 'स' अक्षर से शुरु होता आ इहे शारदा माई के शुरूआती अक्षर ह। ई कवनो संयोग ना ह, ई माई से जुडाव ह, लगाव ह।

जनम से ले के जवानी तक बेटी के साथे केहू छाया अस रहेला त ऊ ह माई। एही से बेटी के जीवन पर माई के छाप ज्यादा होखेला। माई के गोदिये से सांझा पराती, तीज त्योहार भा बिआह विदाई के गीत सुनत कवनो बेटी वीणा पाण्डेय 'भारती' हो जाले आ सँउसे चान अकासे

www.bhojpurisahityangan.com

निरेखे आ उकेरे लागेले।

एह काव्य संग्रह के नांव एही संग्रह के एगो गजल के मथेला ह। सँउसे चान एगो पूर्णता के प्रतीक ह, बाकिर कवयित्री एकरा के पूर्णता के अंत नइखी स्वीकारत, एही से दोसरके पंक्ति में कहत बाड़ी – 'तबो पपीहा प्यासे बा। ई पपीहा प्यासे बा' संपूर्णता में एगो रिक्तता के भान करा रहल बा। ठीको बा, संपूर्णता के स्वीकारता के मतलबे होला विराम। दोसरका आयाम ई बा कि सँउसे चान एगो स्पन्दनशील जीवन आ रागात्मक प्रेम के प्रतीक बा। एह दृष्टि से पुस्तक के नामकरण सफल बा।

सुनर साज–सज्जा के साथे सँउसे चान अकासे अपना प्रभामंडल में पैसठ गो कविता रूपी नक्षत्रन के समेटले बा आ साथ में शहर आ शहर के बाहर के सात आठ गो रचनाकारन के मत मन्तव्य आ आशीर्वचन भी। आई एह संग्रह के कवितन के कुछ बानगी देखल जाउ। संग्रह के पहिला कविता सरस्वती वंदना ह –

आई चुनरी चढ़ाई ज्ञान दायिनी के।
माई भारती कमलदल वासिनी के।

पहिलके प्रयोग अदभूत बा। आम तौर पर भोजपुरिया क्षेत्रन में पीयरी चुनरी गंगा माई, छठी माई भा दुर्गा माई के चढावल जाला, बाकिर वीणा सोचत बाड़ी कि ई सब देवी देवता लोगन के अस्तित्व के मूल में त ज्ञान बा, त एगो चुनरी ज्ञानदायिनियो के चढ़ावे के चाहीं, उहो कहाँ के ज्ञानदायिनी के, त माई भारती किहाँ जे कमलदल प वास करत होखस उनका के। कवयित्री के सीमांकन करे वाला सोच के पीछे के सांच ई बुझाइल कि आज कुछ क्षद्म विद्वता वाला लोग ई तर्क देबे लागल बा अमेरिका इंग्लैंड में लक्ष्मी सुरसती के पूजा ना होखे तबो ऊ सब ज्ञान आ धन में आगे बाड़े।

खैर, वीणा के बचपन गाँव में बितल बा आ बिआह के बाद ऊ जमशेदपुर आवत बाड़ी बाकिर गंवई मनई के दुनिया के सब सुख सुविधा दे दीं तबो मन से गाँव के ऊ मस्ती कहाँ निकलेला। कहत बाड़ी :–

मन में एगो गाँव बसेला–हम त कहब –मन में आपन गाँव बसेला।

जदि रउवा सब ए कविता के विम्वन पर ध्यान देब त मन में एगो स्पन्दन पैदा क दी।

सीमा बहुते महत्वपूर्ण सोच ह एहि सोच से कवनो देश के अस्तित्व बा। अस्तित्व बा त भक्ति आ प्रेमो होई। एही से वीणा कहत बाड़ी – परम पावन मोर देश के धरती/भा जन गण मन दोहराइलें।

एगो भोजपुरिया के जान बसेला भोजपुरी में। एही से मारिशस फीजी जहाँ–जहाँ भोजपुरिया गइलें आपन भाषा सहेज के रखले। एही से कवयित्री के भोजपुरिया मन गुहार करत बा भाई गइल त गइल बाकिर :–

इंग्लिश बोल फारसी बोल,
बोल कवनो भाषा।
बड़ी मीठ लागे भोजपुरी ,
आपन माई भाषा।

श्रृंगार के बिना कवि मन अधूरा होला। प्रेमे कविता ह। रसात्मकं वाक्यं काव्यम् इहे कविता के प्रमाणिक परिभाषा ह। वीणा एइसे सहमत लागत बाड़ी :–

पवन में बसंती लहर देख लेनी।
दबावल कसक के कहर देख लेनी।
आइल कहाँ से इ फूलन में मस्ती,
भंवरन के मांतल असर देख लेनी।

देखी एक तरफ कवनो नायिका कहत बीया कि होखे द भिनुसार ए कोयल, खोतवा उजरबो। जरी से कटइबो घानी बगिया हो रामा। उहवे वीणा के नायिका सोच में परल बिया कि :–

(शेष पृष्ठ 36 पर)

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा

'दाल भात तरकारी' : सुस्वाद बा

□ डॉ० विवेकी राय

पुस्तक	– दाल भात तरकारी, उपन्यासकार – डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव
प्रथम संस्करण	– 2009, कुल पृष्ठ – 190,
मूल्य	– 300/– रुपये
प्रकाशक	– नवशिला प्रकाशन, ए–75, श्रीराम कॉलोनी, निलोठी एक्सटेंशन, नांगलोई, दिल्ली – 110041

भोजपुरी कथा–साहित्य में रमाशंकर श्रीवास्तव के नाम–काम आ कलम–कमाई बुलन्दी पर चोंहपि चुकल बा। एह बुलन्दी में उनकर नवकी उपन्यास–रचना 'दाल भात तरकारी' चार चाँद लगा रहलि बा। एह सामाजिक उपन्यास में संवेदनशील स्थितियन के पहचान आ ओकरा के असरदार शब्द रूप देबे में लेखक के गजब के सफलता मिलिल बा। एह वजह से कुछ स्थितियन के अइसन बेधक चित्र उतरि गइल बा कि पढ़ेवाला के आँखि नम हो जाति बा। एह शब्दन के लिखे वाला स्वयं एगो प्रसंग पर अपना के रोकि ना सकल आ आँसू ढलकि आइल। कवनो कथा–कृति के सफलता के इहो एगो बरिआर कसौटी बा। कवनों समर्थ लेखके का कलम ओइसन जबरदस्त जोर होला कि पाठकन के झकझोरि देला। कथाकार रमाशंकर श्रीवास्तव के प्रस्तुत उपन्यास के कथ्य आ शिल्प दूनू अइसन बा कि ऊ उनकरा के समर्थ लेखक प्रमाणित करत बा।

'दाल भात तरकारी' (2009) एगो दमदार बड़का सामाजिक उपन्यास का रूप में सामने आइल बा। कथाकार कोशिश कइले बा कि आज का जीवन का वास्तविकता वाला हर पहलू के छू के उजागर कइल जाव। कठिन से कठिन समस्यन के सामना करे में लेखक कतराइल नइखे। बेटा–बेटी के बिआह, बेकारी, नौकरी, राजनीतिक दबाव, यूनियनबाजी, हड़ताल, मिल में तालाबन्दी, भुखमरी, फटेहाल गरीबी आ सबका कपार पर हाथ धइले भ्रष्टाचार के भस्मासुर, सगरी–सगरी समस्या बाड़ी स। कथाकार अपना कृति में जूझि रहल बा। समस्या पुरान बाड़ी स बाकि नया–नया पैंतरा बदलि के आवति बाड़ी स। सामाजिक बदलाव के रफ्तार बहुत तेज बा। रोमांचक बा लेखक का नजर से ओके देखल आ कलम का झटका से उछलल शब्द–रूप में यथार्थ के पहिचानल। सामान्य आदमी के नजर जहाँ ना चोंहपि पावेले ओह सचाई वाला बिन्दु के लेखक सामने कइ देला। 'दाल भात तरकारी' में अइसने भइल बा। समस्या पुरनकी बाड़ी स, समस्या नवकी बाड़ी स आ रोज–रोज नया–नया शकल में उभरत बाड़ी स। कथाकार के पारदर्शी नजर सभत्तर घूमि जाति बा आ ऊ अपना पाठकन के खिंचले चलत बा, कमाल के खिंचाव बा। मन ऊबत कहाँ बा? ऊ डूब–डूब जात बा। बेशक, पठनीयता कथा–कृति के एगो बड़ गुण होले।

मन पर छवले रहे वाला स्थिति–चित्रण में एगो चित्र उपन्यास में मेहता शुगर फैक्ट्री के तालाबन्दी वाला बा। फैक्ट्री के यूनियन वाला लोग आपन गोटी सेंके खातिर एह बन्दी के अंजाम दिहलन। नतीजा भइल

www.bhojpurisahityangan.com

कि मजदूर लोगन में भुखमरी फइलि गइलि। एही बीच में इस्लाम मियाँ केहें चोरी हो गइलि। अब गोंइयाँ लोग एकरा के साम्प्रदायिकता वाला मामला बना के दंगा भड़कावे का जुगत में जुटलन। पर्चा–बाजी शुरू भइलि। लिखाइल, 'मुसलमान भाइयो, एक हो जाओ। तुम लोगों को फैक्ट्री से खदेड़ने की साजिश हो रही है...।' वगैरह– वगैरह (पृष्ठ 113) ई बा एगो देश के सत्यानासी राजनीति के चेहरा। एह चेहरन में भारी–भारी घाघ बाड़न। खूंखार मगरमच्छ बाड़न जवन डबरा बनल समाज का गन्दी पोखरी में मढिया लेत बाड़न, लोटत–पोटत बाड़न। भारी प्रदूषण फइलत बा। एह सब सामाजिक राजनीतिक प्रदूषण के यथार्थ चित्रण 'दाल भात तरकारी' में बहुत जम के भइल बा। खूबसूरती ई बा कि ई सगरे चित्र ताजा बाड़न स। बासी नइखन स लागत। अइसन चित्रन वाली एगो जगह कुशल बाबू के दरबार बा। इहवाँ गँवई राजनीति से ले के शहर का राजनीति के दाँव–पेंच अरूझात–सझुरात रहल बाड़न स। (पृष्ठ 150)

ई अच्छा भइल बा कि उपन्यास सकारात्मक सोच वाला अन्त का साथे रचाइल बा। आज हताशा–निराशा का धुँध में देश के एकर बहुत आवश्यकता बा। फैक्ट्री बन्द भइल त मुर्दनी छा गइलि। अन्त में चालू भइलि त जिन्दगी लौटि आइलि, बाकी एगो टीस छोड़ि गइलि। वर्ग–प्रतिनिधि का रूप में एगो मजदूर के चित्रण भइल बा। भट्ठी से शराब पी के आ अनाप–शनाप बोलत, फैक्ट्री में आग लगावे के धमकी देत निकलत बा। घर में चाउर–दालि नइखे। मउगी झंखनि में परलि बा। त, अइसन लड़ाई में आज देश–समाज अझुराइल बा, उद्देश्यहीन, दिशा–हीन। भूमिका में कथाकार ठीके लिखले बा 'पता नइखे चलत कि हमनी का काहे लड़त बानी सन, जीत खातिर कि मरे खातिर ?' दरअसल एह उपन्यास में कथा–नायक मथुरा प्रसाद का इर्द–गिर्द जवन कहानी के बुनावट डाललि गइलि बा ऊ बहुत सोचलि–समुझलि बा। एह में गाँव आ शहर दूनो खेत–खरिहान आ कारखाना का सँगे समेटाइल बा। आबादी के बढ़ला से खेती से गुजर नइखे होत त लोग अब केतना सन्तोष करो ? झख मारि के नोकरी करे निकले के परत बा। उपन्यास के एगो केन्द्रीय पात्र कुशल के कहनाम बा कि 'सन्तोष एक अच्छा गुण है किन्तु इसका एक दुर्गुण भी है कि सन्तुष्ट आदमी प्रगति नहीं करता। (पृष्ठ 46)। कुल्हि मिला के छिपल–छिपल इहे प्रगति के सन्देश एह कृति से मिलि रहल बा, पाठकन के, समाज के आ सगरे देश के। कलछुल–कलछुल दाल–भात का संगे तरकारियो परोसत ई उपन्यास भोजपुरी कथा–साहित्य के परितृप्त आ समृद्ध कइ रहल बा। ●

(पृष्ठ 34 का शेषांश)

कोइलिया काहें कुहकतारी, अमवा के डार हो।

एह तरह के शब्दन आ भावन के चित्रकारी से ई संग्रह भरल पड़ल बा, भाषा सरल, सटीक, प्रवाहमय आ गेय बा। श्रृंगार, भक्ति, देशभक्ति, कृषि, संस्कार, परंपरा, स्वागत, विरह मिलन वगैरह गीतन से ई संग्रह जीवंत भइला के कारन वीणा के कवयित्री मन के बहुआयामी व्यक्तित्व के दर्शन करावत बा।

हमरा आसा बा 'सँउसे चान अकासे' अपना काव्यात्मकता आ लयात्मकता के चलते रउवा लोगन के पसंद के कसउटी पर खरा उतरी।

खड़ंगाझाड़, टेल्को, जमशेदपुर ●

www.bhojpurisahityangan.com

लोकार्पण

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 28 वां अधिवेशन
के मंच पर जमशेदपुर से प्रकाशित 3 गो पुस्तकन के लोकार्पण

जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के 59 वां फूल का रूप में
प्रकाशित 'डॉ० वीणा पाण्डेय 'भारती' के काव्य संकलन
'सँउसे चान आकासे' के लोकार्पण

जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के 60 वां प्रकाशन
श्री कैलाश नाथ शर्मा 'गाजीपुरी' के गीत संग्रह
'चलऽ चलीं गउवां के ओर' लोकार्पित

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 28 वां अधिवेशन, अमनौर में जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् के दमदार उपस्थिति रहल। उक्त अवसर पर लिहल कुछ चुनिन्दा तस्वीर